श्री दशाश्रुतस्कंध सूत्र-१

।। श्री आगम-गुण-मञ्जूषा ।।

।। શ્રી આગમ-ગુણ-મંજૂષા ।।

।। Sri Agama Guna Manjusa ।।

(सचित्र)

प्रेरक-संपादक

अचलगच्छाधिपति प.पू.आ.भ.स्व. श्री गुणसागर सूरीश्वरजी म.सा.

४५ आगमो का संक्षिप्त परिचय

११ अंगसूत्र

१) **श्री आचारांग सूत्र :-** इस सूत्र मे साधु और श्रावक के उत्तम आचारो का सुंदर वर्णन है। इनके दो श्रुतस्कंध और कुल २५ अध्ययन है। द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, धर्मकथानुयोग और चरणकरणानुयोगोमे से मुख्य चौथा अनुयोग है। उपलब्ध श्लोको कि संख्या २५०० एवं दो चुलिका विद्यमान है।

२) **श्री सूत्रकृतांग सूत्र :-** श्री सुयगडांग नाम से भी प्रसिद्ध इस सूत्र मे दो श्रुतस्कंध और २३ अध्ययन के साथ कुलमिला के २००० श्लोक वर्तमान मे विद्यमान है। १८० क्रियावादी, ८४ अक्रियावादी, ६७ अज्ञानवादी अपरंच द्रव्यानुयोग इस आगम का मुख्य विषय रहा है।

३) **श्री स्थानांग सूत्र :-** इस सूत्र ने मुख्य गणितानुयोग से लेकर चारो अनुयोंगो कि बाते आती है। एक अंक से लेकर दस अंको तक मे कितनी वस्तुअें है इनका रोचक वर्णन है, ऐसे देखा जाय तो यह आगम की शैली विशिष्ट है और लगभग ७६०० श्लोक है।

४) **श्री समवायांग सूत्र :-** यह सूत्र भी ठाणांगसूत्र की भांति कराता है। यह भी संग्रहग्रंथ है। एक से सो तक कौन कौन सी चीजे है उनका उल्लेख है। सो के बाद देढसो, दोसो, तीनसो, चारसो, पांचसो और दोहजार से लेकर कोटाकोटी तक कौनसे कौनसे पदार्थ है उनका वर्णन है। यह आगमग्रंथ लगभग १६०० श्लोक प्रमाण मे उपलब्ध है।

५) **श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र (भगवती सूत्र) :-** यह सबसे बडा सूत्र है, इसमे ४२ शतक है, इनमे भी उपविभाग है, १९२५ उद्देश है। इस आगमग्रंथ मे प्रभु महावीर के प्रथम शिष्य श्री गौतमस्वामी गणधरादि ने पुछे हुए प्रश्नो का प्रभु वीर ने समाधान किया है। प्रश्नोत्तर संकलन से इस ग्रंथ की रचना हुइ है। चारो अनुयोगो कि बाते अलग अलग शतको मे वर्णित है। अगर संक्षेप मे कहना हो तो श्री भगवतीसूत्र रत्नो का खजाना है। यह आगम १५००० से भी अधिक संकलित श्लोको मे उपलब्ध है।

६) **ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र :-** यह सूत्र धर्मकथानुयोग से है। पहले इसमे साडेतीन करोड कथाअे थी अब ६००० श्लोको मे उन्नीस कथाअें उपलब्ध है।

७) **श्री उपासकदशांग सूत्र :-** इसमें बाराह व्रतो का वर्णन आता है और १० महाश्रावको के जीवन चरित्र है, धर्मकथानुंयोग के साथ चरणकरणानुयोग भी इस सूत्र मे सामील है। इसमे ८०० से ज्यादा श्लोक है।

८) **श्री अन्तकृद्दशांग सूत्र :-** यह मुख्यत: धर्मकथानुयोग मे रचित है। इस सूत्र में श्री शत्रुंजयतीर्थ के उपर अनशन की आराधना करके मोक्ष मे जानेवाले उंत्तम जीवो के छोटे छोटे चरित्र दिए हुए है। फिलाल ८०० श्लोको मे ही ग्रंथ की समाप्ति हो जाती है।

९) **श्री अनुत्तरोपपातिक दशांग सूत्र :-** अंत समय मे चारित्र की आराधना करके अनुत्तर विमानवासी देव बनकर दूसरे भव मे फीर से चारित्र लेकर मुक्तिपद को प्राप्त करने वाले महान् श्रावको के जीवनचरित्र है इसलीए मुख्यतया धर्मकथानुयोगवाला यह ग्रंथ २०० श्लोक प्रमाणका है।

१०) **श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र :-** इस सूत्र मे मुख्यविषय चरणकरणानुयोग है। इस आगम में देव-विद्याधर-साधु-साध्वी श्रावकादि ने पुछे हुए प्रश्नों का उत्तर प्रभु ने कैसे दिया इसका वर्णन है। जो नंदिसूत्र मे आश्रव-संवरद्वार है ठीक उसी तरह का वर्णन इस सूत्र मे भी है। कुलमिला के इसके २०० श्लोक है।

११) **श्री विपाक सूत्र :-** इस अंग मे २ श्रुतस्कंध है पहला दु:खविपाक और दूसरा सुखविपाक, पहेले में १० पापीओं के और दूसरे में १० धर्मीओ के द्रष्टांत है मुख्यतया धर्मकथानुयोग रहा है। १२०० श्लोक प्रमाण का यह अंगसूत्र है।

१२ उपांग सूत्र

१) **श्री औपपातिक सूत्र :-** यह आगम आचारांग सूत्र का उपांग है। इस मे चंपानगरी का वर्णन १२ प्रकार के तपों का विस्तार कोणिक का जुलुस अम्बडपरिव्राजक के ७०० शिष्यो की बाते है। १५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

२) **श्री राजप्रश्नीय सूत्र :-** यह आगम सुयगडांगसूत्र का उपांग है। इसमें प्रदेशीराजा का अधिकार सूर्याभदेव के जरीए जिनप्रतिमाओं की पूजा का वर्णन है। २००० श्लोको से भी अधिक प्रमाण का ग्रंथ है।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३) **श्री जीवाजीवाभिगम सूत्र :-** यह ठाणांगसूत्र का उपांग है। जीव और अजीव के बारे मे अच्छा विश्लेषण किया है। इसके अलावा जम्बुद्विप की जगती एवं विजयदेव ने कि हुइ पूजा की विधि सविस्तर बताइ है। फिलाल जिज्ञासु ४ प्रकरण, क्षेत्रसमासादि जो पढते है वह सभी ग्रंथे जीवाभिगम अपरन्च पन्नवणासूत्र के ही पदार्थ है। यह आगम सूत्र ४७०० श्लोक प्रमाण का है।

४) **श्री प्रज्ञापना सूत्र-** यह आगम समवायांग सूत्र का उपांग है। इसमे ३६ पदो का वर्णन है। प्राय: ८००० श्लोक प्रमाण का यह सूत्र है।

५) **श्री सुर्यप्रज्ञप्ति सूत्र :-**

६) **श्री चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र :-** इस दो आगमो मे गणितानुयोग मुख्य विषय रहा है। सूर्य, चन्द्र, ग्रहादि की गति, दिनमान ऋतु अयनादि का वर्णन है, दोनो आगमो मे २२००, २२०० श्लोक है।

७) **श्री जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र :-** यह आगम भी अगले दो आगमों की तरह गणितानुयोग मे है। यह ग्रंथ नाम के मुताबित जंबूद्विप का सविस्तर वर्णन है। ६ आरे के स्वरूप बताया है। ४५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

८) **श्री निरयावली सूत्र :-** इन आगम ग्रंथो में हाथी और हारादि के कारण नानाजी का दोहित्र के साथ जो भयंकर युद्ध हुआ उस मे श्रेणिक राजा के १० पुत्र मरकर नरक मे गये उसका वर्णन है।

९) **श्री कल्पावतंसक सूत्र :-** इसमें पद्मकुमार और श्रेणिकपुत्र कालकुमार इत्यादि १० भाइओं के १० पुत्रों का जीवन चरित्र है।

१०) **श्री पुष्पिका उपांग सूत्र :-** इसमें १० अध्ययन है। चन्द्र, सूर्य, शुक्र, बहुपुत्रिका देवी, पूर्णभद्र, माणिभद्र, दत्त, शील, जल, अणाढ्य श्रावक के अधिकार है।

११) **श्री पुष्पचुलीका सूत्र :-** इसमें श्रीदेवी आदि १० देवीओ का पूर्वभव का वर्णन है।

१२) **श्री वृष्णिदशा सूत्र :-** यादववंश के राजा अंधकवृष्णि के समुद्रादि १०पुत्र, १० मे पुत्र वासुदेव के पुत्र बलभद्रजी, निषधकुमार इत्यादि १२ कथाएं है। अंतके पांचो उपांगो को निरियावली पन्चक भी कहते है।

दश प्रकीर्णक सूत्र

१) **श्री चतुशरण प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में अरिहन्त, सिद्ध, साधु और गच्छधर्म के आचार के स्वरूप का वर्णन एवं चारों शरण की स्वीकृति है।

२) **श्री आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस आगम का विषय है अंतिम आराधना और मृत्युसुधार

३) **श्री भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में पंडित मृत्यु के तीन प्रकार (१) भक्त परिज्ञा मरण (२) इंगिनी मरण (३) पादोपगमन मरण इत्यादि का वर्णन है।

६) **श्री संस्तारक प्रकीर्णक सूत्र :-** नामानुसार इस पयन्ने में संथारा की महिमा का वर्णन है। इन चारों पयन्ने पठन के अधिकारी श्रावक भी है।

७) **श्री तंदुल वैचारिक प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने को पूर्वाचार्यगण वैराग्य रस के समुद्र के नाम से चीन्हित करते है। १०० वर्षो में जीवात्मा कितना खानपान करे इसकी विस्तृत जानकारी दी गई है। धर्म की आराधना ही मानव मन की सफलता है। ऐसी बातों से गुंफित यह वैराग्यमय कृति है।

८) **श्री चन्दाविजय प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु सुधार हेतु कैसी आराधना हो इसे इस पयन्ने में समजाया गया है।

९) **श्री देवेन्द्र-स्तव प्रकीर्णक सूत्र :-** इन्द्र द्वारा परमात्मा की स्तुति एवं इन्द्र संबधित अन्य बातों का वर्णन है।

१०A) **श्री मरणसमाधि प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु संबधित आठ प्रकरणों के सार एवं अंतिम आराधना का विस्तृत वर्णन इस पयन्ने में है।

१०B) **श्री महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में साधु के अंतिम समय में किए जाने योग्य पयन्ना एवं विविध आत्महितकारी उपयोगी बातों का विस्तृत वर्णन हे।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०C) **श्री गणिविद्या प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयत्रे में ज्योतिष संबधित बड़े ग्रंथो का सार है।

उपरोक्त दसों पयन्नों का परिमाण लगभग २५०० श्लोकों में बध्य हे। इसके अलावा २२ अन्य पयन्ना भी उपलब्ध हैं। और दस पयन्नों में चंदाविजय पयन्नो के स्थान पर गच्छाचार पयन्ना को गिनते हैं।

छह छेद सूत्र

(१) निशिथ सूत्र (२) महानिशिथ सूत्र (३) व्यवहार सूत्र (४) जीतकल्प सूत्र (५) पंचकल्प सूत्र (६) दशा श्रुतस्कंध सूत्र

इन छेद सूत्र ग्रन्थों में उत्सर्ग, अपवाद और आलोचना की गंभीर चर्चा है। अति गंभीर केवल आत्मार्थ, भवभीरू, संयम में परिणत, जयणावंत, सूक्ष्म दष्टि से द्रव्यक्षेत्रादिक विचार धर्मदष्टि से करने वाले, प्रतिपल छहकाया के जीवों की रक्षा हेतु चिंतन करने वाले, गीतार्थ, परंपरागत उत्तम साधु, समाचारी पालक, सर्वजीवो के सच्चे हित की चिंता करने वाले ऐसे उत्तम मुनिवर जिन्होंने गुरु महाराज की निश्रा में योगद्वहन इत्यादि करके विशेष योग्यता अर्जित की हो ऐसे मुनिवरों को ही इन ग्रन्थों के अध्ययन पठन का अधिकार है।

चार मूल सूत्र

१) **श्री दशवैकालिक सूत्र :-** पंचम काल के साधु साध्वीओं के लिए यह आगमग्रन्थ अमृत सरोवर सरीखा है। इसमें दश अध्ययन हैं तथा अन्त में दो चूलिकाए रतिवाक्या व, विविक्त चरिया नाम से दी हैं। इन चूलिकाओं के बारे में कहा जाता है कि श्री स्थूलभद्रस्वामी की बहन यक्षासाध्वीजी महाविदेहक्षेत्र में से श्री सीमंधर स्वामी से चार चूलिकाए लाइ थी। उनमें से दो चूलिकाएं इस ग्रंथ में दी हैं। यह आगम ७०० श्लोक प्रमाण का है।

२) **श्री उत्तराध्ययन सूत्र :-** परम कृपालु श्री महावीरभगवान के अंतिम समय के उपदेश इस सूत्र में हैं। वैराग्य की बातें और मुनिवरों के उच्च आचारों का वर्णन इस आगम ग्रंथ में ३६ अध्ययनों में लगभग २००० श्लोकों द्वारा प्रस्तुत हें।

३) **श्री निर्युक्ति सूत्र :-** चरण सत्तरी-करण सत्तरी इत्यादि का वर्णन इस आगम ग्रन्थ में है। पिंडनिर्युक्ति भी कई लोग ओघ निर्युक्ति के साथ मानते हैं अन्य कई लोग इसे अलग आगम की मान्यता देते हैं। पिंडनिर्युक्ति में आहार प्राप्ति की रीत बताइ हें। ४२ दोष कैसे दूर हों और आहार करने के छह कारण और आहार न करने के छह कारण इत्यादि बातें हैं।

४) **श्री आवश्यक सूत्र :-** छह अध्ययन के इस सूत्र का उपयोग चतुर्विध संघ में छोट बडे सभी को है। प्रत्येक साधु साध्वी, श्रावक-श्राविका के द्वारा अवश्य प्रतिदिन प्रात: एवं सायं करने योग्य क्रिया (प्रतिक्रमण आवश्यक) इस प्रकार हैं :-

(१) सामायिक (२) चतुर्विंशति (३) वंदन (४) प्रतिक्रमण (५) कार्योत्सर्ग (६) पच्चक्खाण

दो चूलिकाए

१) **श्री नंदी सूत्र :-** ७०० श्लोक के इस आगम ग्रंन्थ में परमात्मा महावीर की स्तुति, संघ की अनेक उपमाए, २४ तीर्थंकरों के नाम ग्यारह गणधरों के नाम, स्थविरावली और पांच ज्ञान का विस्तृत वर्णन है।

२) **श्री अनुयोगद्वार सूत्र :-** २००० श्लोकों के इस ग्रन्थ में निश्चय एवं व्यवहार के आलंबन द्वारा आराधना के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी गइ है। अनुयोग-याने शास्त्र की व्याख्या जिसके चार द्वार है (१) उत्क्रम (२) निक्षेप (३) अनुगम (४) नय

यह आगम सब आगमों की चावी है। आगम पढने वाले को प्रथम इस आगम से शुरुआत करनी पडती है। यह आगम मुखपाठ करने जैसा है।

॥ इति शम् ॥

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Introduction

45 *Āgamas*, a short sketch

I Eleven *Aṅgas* :

(1) **Ācārāṅga-sūtra :** It deals with the religious conduct of the monks and the Jain householders. It consists of 02 Parts of learning, 25 lessons and among the four teachings on entity, calculation, religious discourse and the ways of conduct, the teaching of the ways of conduct is the main topic here. The Āgama is of the size of 2500 *Ślokas*.

(2) **Sūyagaḍāṅga-sūtra :** It is also known as Sūtra-Kṛtāṅga. It's two parts of learning consist of 23 lessons. It discusses at length views of 363 doctrine-holders. Among them are 180 ritualists, 84 non-ritualists, 67 agnostics and 32 restraint-propounders, though it's main area of discussion is the teaching of entity. It is available in the size of 2000 *Ślokas*.

(3) **Ṭhāṇāṅga-sūtra :** It begins with the teaching of calculation mainly and discusses other three teachings subordinately. It introduces the topic of one dealing with the single objects and ends with the topic of eight objects. It is of the size of 7600 *Ślokas*.

(4) **Samavāyāṅga-sūtra :** This is an encompendium, introducing 01 to 100 objects, then 150, 200 to 500 and 2000 to crores and crores of objects. It contains the text of size of 1600 *Ślokas*.

(5) **Vyākhyā-prajñapti-sūtra :** It is also known as Bhagavatī-sūtra. It is the largest of all the *Aṅgas*. It contains 41 centuries with subsections. It consists of 1925 topics. It depicts the questions of Gautama *Gaṇadhara* and answers of Lord Mahāvīra. It discusses the four teachings in the centuries. This *Āgama* is really a treasure of gems. It is of the size of more than 15000 *Ślokas*.

(6) **Jñātādharma-Kathāṅga-sūtra :** It is of the form of the teaching of the religious discourses. Previously it contained three and a half crores of discourses, but at present there are 19 religious discourses. It is of the size of 6000 *Ślokas*.

(7) **Upāsaka-daśāṅga-sūtra :** It deals with 12 vows, life-sketches of 10 great Jain householders and of Lord Mahāvīra, too. This deals with the teaching of the religious discourses and the ways of conduct. It is of the size of around 800 *Ślokas*.

(8) **Antagaḍa-daśāṅga-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the religious discourses. It contains brief life-sketches of the highly spiritual souls who are born to liberate and those who are liberating ones : they are Andhaka Vṛṣṇi, Gautama and other 9 sons of queen Dhāriṇī, 8 princes like Akṣobhakumāra, 6 sons of Devaki, Gajasukumāra, Yādava princes like Jāli, Mayālī, Vasudeva Kṛṣṇa, 8 queens like Rukmiṇī. It is available of the size of 800 *Ślokas*.

(9) **Anuttarovavāyi-daśāṅga-sūtra :** It deals with the teaching of the religious discourses. It contains the life-sketches of those who practise the path of religious conduct, reach the *Anuttara Vimāna*, from there they drop in this world and attain Liberation in the next birth. Such souls are Abhayakumāra and other 9 princes of king Śrenika, Dīrghasena and other 11 sons, Dhannā *Aṇagāra*, etc. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(10) **Praśna-vyākaraṇa-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the ways of conduct. As per the remark of the Nandī-sūtra, it contained previously Lord Mahāvīra's answers to the questions put by gods, Vidyādharas, monks, nuns and the Jain householders. At present it contains the description of the ways leading to transgression and the self-control. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(11) **Vipāka-sūtrāṅga-sūtra :** It consists of 2 parts of learning. The first part is called the Fruition of miseries and depicts the life of 10 sinful souls, while the second part called the Fruition of happiness narrates illustrations of 10 meritorious souls. It is available of the size of 1200 *Ślokas*.

II Twelve *Upāṅgas*

(1) **Uvavāyi-sūtra :** It is a subservient text to the *Ācārāṅga-sūtra*. It deals with the description of Campā city, 12 types of austerity, procession-arrival of Koṇika's marriage, 700 disciples of the monk Ambaḍa. It is of the size of 1000 *Ślokas*.

(2) **Rāyapaseṇī-sūtra :** It is a subservient text to Sūyagaḍāṅga-sūtra. It depicts king Pradesī's jurisdiction, god Sūryābha worshipping the Jina idols, etc. It is of the size of 2000 *Ślokas*.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(3) **Jīvābhigama-sūtra :** It is a subservient text to Ṭhāṇāṅga-sūtra. It deals with the wisdom regarding the self and the non-self, the Jambū continent and its areas, etc. and the detailed description of the veneration offered by god Vijaya. The four chapters on areas, society, etc. published recently are composed on the line of the topics of this *Sūtra* and of the Pannāvaṇā-sūtra. It is of the size of 4700 *Ślokas*.

(4) **Pannāvaṇā-sūtra :** It is a subservient text to the Samavāyāṅga-sūtra. It describes 36 steps or topics and it is of the size of 8000 *Ślokas*.

(5) **Sūrya-prajñapti-sūtra** and

(6) **Candra-prajñapti-sūtra :** These two falls under the teaching of the calculation. They depict the solar and the lunar transit, the movement of planets, the variations in the length of a day, seasons, northward and the southward solstices, etc. Each one of these *Āgamas* are of the size of 2200 *Ślokas*.

(7) **Jambūdvīpa-prajñapti-sūtra :** It mainly deals with the teaching of the calculations. As it's name indicates, it describes at length the objects of the Jambū continent, the form and nature of 06 corners (*āra*). It is available in the size of 4500 *Ślokas*.

Nirayāvalī-pañcaka :

(8) **Nirayāvalī-sūtra :** It depicts the war between the grandfather and the daughter's son, caused of a necklace and the elephant, the death of king Śreṇika's 10 sons who attained hell after death. This war is designated as the most dreadful war of the Downward (*avasarpiṇī*) age.

(9) **Kalpāvataṁsaka-sūtra :** It deals with the life-sketches of Kālakumara and other 09 princes of king Śreṇika, the life-sketch of Padamakumara and others.

(10) **Pupphiyā-upāṅga-sūtra :** It consists of 10 lessons that covers the topics of the Moon-god, Sun-god, Venus, queen Bahuputrikā, Pūrṇabhadra, Maṇibhadra, Datta, Śila, Bala and Aṇāḍḍhiya.

(11) **Pupphaculīya-upāṅga-sūtra :** It depicts previous births of the 10 queens like Śrīdevī and others.

(12) **Vahnidaśā-upāṅga sūtra :** It contains 10 stories of Yadu king Andhakavṛṣṇi, his 10 princes named Samudra and others, the tenth one Vāsudeva, his son Balabhadra and his son Niṣaḍha.

III Ten *Payannā-sūtras* :

(1) **Āurapaccakhāṇa-sūtra :** It deals with the final religious practice and the way of improving (the life so that the) death (may be improved).

(2) **Bhattaparinnā-sūtra :** It describes (1) three types of *Paṇḍita* death, (2) knowledge, (3) Iṅgini devotee (4) *Pādapopagamana*, etc.

(4) **Santhāraga-payannā-sūtra :** It extols the *Saṁstāraka*.

**** These four payannās can also be learnt and recited by the Jain householders. ****

(5) **Tandula-viyāliya-payannā-sūtra :** The ancient preceptors call this Payannā-sūtra as an ocean of the sentiment of detachment. It describes what amount of food an individual soul will eat in his life of 100 years, the human life can be justified by way of practising a religious life.

(6) **Candāvijaya-payannā-sūtra :** It mainly deals with the religious practice that improves one's death.

(7) **Devendrathui-payannā-sūtra :** It presents the hymns to the Lord sung by Indras and also furnishes important details on those Indras.

(8) **Maraṇasamādhi-payannā-sūtra :** It describes at length the final religious practice and gives the summary of the 08 chapters dealing with death.

(9) **Mahāpaccakhāṇa-payannā-sūtra :** It deals specially with what a monk should practise at the time of death and gives various beneficial informations.

(10) **Gaṇivijaya-payannā-sūtra :** It gives the summary of some treatise on astrology.

These 10 Payannās are of the size of 2500 *Ślokas*.

Besides about 22 Payannās are known and even for these above 10 also there is a difference of opinion about their names. The Gacchācāra is taken, by some, in place of the Candāvijaya of the 10 Payannās.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

IV Six *Cheda-sūtras*

(1) Vyavahāra-sūtra, (2) Nisītha-sūtra,
(3) Mahānisītha-sūtra, (4) Pancakalpa-sūtra,
(5) Daśāśruta-skandha-sūtra and (6) Bṛhatkalpa-sūtra.

These Chedasūtras deal with the rules, exceptions and vows.

The study of these is restricted only to those best monks who are (1) serene, (2) introvert, (3) fearing from the worldly existence, (4) exalted in restraint, (5) self-controlled, (6) rightfully descerning the subtlety of entity, territories, etc. (7) pondering over continuously the protection of the six-limbed souls, (8) praiseworthy, (9) exalted in keeping the tradition, (10) observing good religious conduct, (11) beneficial to all the beings and (12) Who have paved the path of Yoga under the guidance of their master.

V Four *Mūlasūtras*

(1) **Daśavaikālika-sūtra :** It is compared with a lake of nectar for the monks and nuns established in the fifth stage. It consists of 10 lessons and ends with 02 Cūlikās called Rativākyā and Vivittacariyā. It is said that monk Sthūlabhadra's sister nun Yakṣā approached Simandhara Svāmī in the Mahāvideha region and received four Cūlikās. Here are incorporated two of them.

(2) **Uttarādhyayana-sūtra :** It incorporates the last sermons of Lord Mahāvīra. In 36 lessons it describes detachment, the conduct of monks and so on. It is available in the size of 2000 *Slokas*.

(3) **Anuyogadvāra-sūtra :** It discusses 17 topics on conduct, behaviour, etc. Some combine Piṇḍaniryukti with it, while others take it as a separate *Āgama*. Piṇḍaniryukti deals with the method of receiving food (*bhikṣā* or *gocarī*), avoidance of 42 faults and to receive food, 06 reasons of taking food, 06 reasons for avoiding food, etc.

(4) **Āvaśyaka-sūtra :** It is the most useful *Āgama* for all the four groups of the Jain religious constituency. It consists of 06 lessons. It describes 06 obligatory duties of monks, nuns, house-holders and housewives. They are : (1) *Sāmāyika*, (2) *Caturviṁśatistava*, (3) *Vandanā*, (4) *Pratikramaṇa*, (5) Kāyotsarga and (6) *Paccakhāṇa*.

VI Two *Cūlikās*

(1) **Nandī-sūtra :** It contains hymn to Lord Mahāvīra, numerous similies for the religious constituency, name-list of 24 *Tīrthaṅkaras* and 11 *Gaṇadharas*, list of *Sthaviras* and the fivefold knowledge. It is available in the size of around 700 *Ślokas*.

(2) **Anuyogadvāra-sūtra :** Though it comes last in the serial order of the 45 *Āgamas*, the learner needs it first. It is designated as the key to all the *Āgamas*. The term *Anuyoga* means explanatory device which is of four types : (1) Statement of proposition to be proved, (2) logical argument, (3) statement of accordance and (4) conclusion.

It teaches to pave the righteous path with the support of firm resolve and wordly involvements.

It is of the size of 2000 *Ślokas*.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

આગમ - ૩૯ - ૧

ચરણાનુયોગમય દશાશ્રુતસ્કંધ સૂત્ર - ૩૯

આચાર દશા

દશા ----------૧૦

ઉપલબ્ધ મૂલપાઠ ----------૧૮૩૦ શ્લોક પ્રમાણ

ગદ્યસૂત્ર ----------૨૧૬

પદ્યસૂત્ર ----------૫૨

દશા	સૂત્રસંખ્યા	દશા	સૂત્રસંખ્યા
પ્રથમા	૨૧	ષષ્ઠી	૨૮
દ્વિતીયા	૨૨	સપ્તમી	૩૪
તૃતીયા	૩૫	અષ્ટમી	૧
ચતુર્થી	૧૯	નવમી	૪૦
પંચમી	૨૮	દશમી	૪૦
	૧૨૫		૧૪૩
			+ ૧૨૫
			૨૬૮

પ્રથમા દશામાં સ્થવિરો દ્વારા કહેવાયેલાં ૧૦ અસમાધિસ્થાનો જણાવ્યાં છે.

દ્વિતીયા દશામાં સ્થવિરોક્ત (સ્થવિરો દ્વારા કહેવાયેલાં) ૨૧ સબળ દોષો છે.

તૃતીયા દશામાં સ્થવિરોક્ત ૩૩ આશાતનાઓ છે.

ચતુર્થી દશામાં સ્થવિરોક્ત આઠ ગણિસંપદા, વિનયશિક્ષાના ચાર ભેદ, શિષ્ય-વિનયના ચાર ભેદ, તથા ઉપકરણ-ઉત્પાદન, સહાયતા, ગુણાનુવાદ અને ગણભાર વહનના ચાર-ચાર ભેદો છે.

પંચમી દશામાં ભગવાન મહાવીરનું વાણિજ્ય ગ્રામમાં સમવસરણ અને સ્થવિરોક્ત ૧૦ ચિત્ત-સમાધિ સ્થાનોની વાત છે.

ષષ્ઠી દશામાં સ્થવિરોક્ત ૧૧ ઉપાસક પ્રતિમાઓ તેમજ અક્રિયાવાદી અને ક્રિયાવાદીના વર્ણન છે.

સપ્તમી દશામાં સ્થવિરોક્ત ૧૨ ભિક્ષુ પ્રતિમાઓની વાત છે.

અષ્ટમી પર્યૂષણા દશામાં ભગવાન મહાવીરના પાંચ કલ્યાણની વાત છે.

નવમી દશામાં ભગવાન મહાવીરનું ચંપાનગરીમાં સમવસરણ અને ૩૦ મહામોહનીય સ્થાનોનું વર્ણન છે.

દશમી આયતી દશામાં ભગવાન મહાવીરનું રાજગૃહમાં પદાર્પણ, નવનિદાન કર્મો, નિદાન કરનારાઓની ગતિ-ફળ તેમજ નિર્ગ્રંથ-નિર્ગ્રંથીઓની આલોચનાથી માંડીને આરાધના સુધીની વાતો છે.

सिरि उसहदेव सामिस्स णमो। सिरि गोडी - जिराउला - सव्वोदयपासणाहाणं णमो। नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महइ महावीर वद्धमाण सामिस्स। सिरि गोयम - सोहम्माइ सव्व गणहराणं णमो। सिरि सुगुरु - देवाणं णमो। **卐卐卐 श्रीदशाश्रुतस्कंधसूत्रम् 卐卐卐** नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्वसाहूणं (।१।प्र०) 'एसो पंचनमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ हवइ मंगलं (प्र०॥१॥) सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं ।१। इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं वीसं असमाहिठाणा पन्नत्ता, कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं वीसं असमाहिठाणा पं०?, इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं वीसं असमाहिठाणा पं० तं०-दवदवचारी यावि भवति, अप्पमज्जियचारी यावि०, दुप्पमज्जियचारी यावि०, अतिरित्तसेज्जासणिए, रायणियपरिभासी, थेरोवघाइए, भूतोवघातिए, संजलणे, कोहणे, पिट्ठिमंसिए यावि० १० अभिक्खणं अभिक्खणं ओधारित्ता, णवाइं अधिकरणाइं अणुप्पणाइं उप्पाइया यावि०, पुराणाइं अधिकरणाइं खामित्तविउसविताइं उदीरित्ता, अकाले सज्झायकारी यावि०, ससरक्खपाणिपादे, सद्दकरे, झंझकरे, कलहकरे, सूरप्पमाणभोई एसणाइ असमिए यावि भवति २०, एते थेरेहिं भगवंतेहिं वीसं असमाहिट्ठाणा पन्नत्तत्ति बेमि।२॥ **असमाधिस्थानाध्ययनं** १॥ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं एक्कवीसं सबला पं०, कयरे खलु०?, इमे खलु० तं०-हत्थकम्मं करेमाणे सबले, मेहुणं पडिसेवेमाणे, राइभोयणे भुंजमाणे , आहाकम्मं भुंजमाणे, रायपिंडं भुंजमाणे, उद्देसियं कीयं पामिच्चं अच्छिज्जं अणिसिट्ठं आहट्टु दिज्जमाणं भुंजमाणे, अभिक्खणं २ पडियाइक्खित्ता भुंजमाणे, अंतो मासस्स तओ दगलेवे करेमाणे, अंतो छण्हं मासाणं गणाओ गण संकममाणे, अंतो मासस्स तओ माइठाणे करेमाणे १० सागारियं पिंडं भुंजमाणे, आउट्टियाए पाणाइवायं करेमाणे, आउट्टियाए मुसावायं करेमाणे, आउट्टियाए अदिण्णादाणं गिण्हमाणे, आउट्टियाए अणंतरहियाए पुढवीए ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेतेमाणे, एवं ससिणिद्धाए पुढवीए एवं ससरक्खाए, आउट्टियाए चित्तमंताए सिलाए चित्तमंताए लेलुए कोलावासंसि वा दारूए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउस्से सउत्तिंगपणगदगमट्टियमक्कडसंताणए तहप्पगारं ठाणं वा सिज्जं वा निसीहियं वा चेतेमाणे,आउट्टियाए मूलभोयणं वा कंदभोयणं वा (खंध०) तया० वा पवालभोयणं वा पुप्फभोयणं वा फलभोयणं वा बीयभोयणं वा हरियभोयणं भुंजमाणे, अंतो संवच्छरस्स दस दगलेवे करेमाणे, अंतो संवच्छरस्स दस माइठाणाइं करेमाणे, आउट्टियाए सीतोदगवियडेण हत्थेण वा मत्तेण वा दव्वीए वा भायणेण वा असणं वा० पडिगाहेत्ता भुंजमारे २१, एते खलु थेरेहिं भगवंतेहिं एक्कवीसं सबला पन्नत्तत्ति बेमि।**☆☆☆ ३॥ शबलाध्ययनं २॥☆☆☆** सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं तेत्तीसं आसायणाओ पं०, कयरा खलु थेरेहिं०?, इमाओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं तेत्तीसं आसायणाओ पं० तं०-सेहे रायणिस्स पुरओ गंतो भवति आसायणा सेहस्स, सेहे रायणियस्स सपक्खं (पक्खओ) गंता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे रायणिगस्स आसण्णं गंता भवति आसायणा सेहस्स, एवं एएणं अभिलावेणं, सेहे राइणियस्स पुरओ चिट्ठित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स सपक्खं चिट्ठित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स आसन्नं चिट्ठित्ता भवति आसायणा सेहस्स सेहे राइणियस्स पुरवो निसीइता भवति आसापणा सहेस्स सेहे रायणियस्स सपक्खं निसीइता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे साइणियस्स आसन्न निसीइत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणिएण सद्धिं बहिया वियारभूमिं निक्खंते समाणे तत्थ पुव्वामेव सेहतराए आयामति पच्छा रायणिए आसायणा सेहस्स १० सेहे राइणिएणं सद्धिं बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खंते समाणे तत्थ पुव्वामेव सेहतराए आलोएति पच्छा राइणिए आसायणा सेहस्स, केइ राइणियस्स पुव्वसंलत्तए सिया तं पुव्वामेव सेहतराए आलवइ पच्छा राइणिए आसायणा सेहस्स, सेहे रायणियस्स राओ वा वियाले वा वाहरमाणस्स अज्जो ! के सुत्ते ? के जागरे ? तत्थ सेहे जागरमाणे राइणियस्स अप्पडिसुणित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे असणं वा० पडिग्गाहिज्जा तं पुव्वामेव सेहतरागस्स आलोएति पच्छा रासणियस्स आसायणा सेहस्स, सेहे असणं वा० पडिग्गाहित्ता पुव्वामेव सेहतरागं पडिदंसेति० आसायणा सेहस्स, सेहे असणं वा० पडिग्गाहित्ता पुव्वामेव सेहतरागं

सौजन्य :-अं. सौ. रीटा कीशोर जीवराज भैशेरी ह. मेहुल। २।५२ (गढ)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवणिमंतेति पच्छा रासणिए आसायणा सेहस्स, सेहे राइणिएणं सद्धिं असणं वा० पडिगाहित्ता तं राइणियं पणापुच्छित्ता जस्स २ इच्छति तस्स २ खद्धं २ दलयति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणिएण सद्धिं असणं वा० आहारेमाणे तत्थ सेहे खद्धं २ डायं २ रसियं २ ऊसढं २ मणुण्णं २ मणामं २ निद्धं २ लुक्खं २ आहारित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स वाहरमाणस्स अपडिसुणित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स वाहरमाणस्स तत्थगते चेव पडिसुणित्ता भवति आसायणा सेहस्स, २० सेहे राइणियं किंति वत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियं तुमंति वत्ता भवति आसायणा (२४५) सेहस्स, सेहे राइणियं खद्धं २ वत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियं तज्जाएणं तज्जायं पडिभणित्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स इति एवं वत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स कह कहेमाणस्स णो सुमरसित्ति वत्ता भवति आसातणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स नो सुमणा भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स परिसं भेत्ता भवति आसायणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स कहं आच्छिंदित्ता भवति आसादणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स तीसे परिसाए अणुट्ठिताए अभिन्नाए अव्वोच्छिन्नाए अव्वोगडाए दुच्चंपि तमेव कहं कहेत्ता भवति आसादणा सेहस्स ३० सेहे राइणियस्स सेज्जासंथारगं पाएणं संघट्टित्ता हत्थेणं अणणुण्णवेत्ता गच्छति आसातणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स सेज्जासंथारए चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति आसादणा सेहस्स, सेहे राइणियस्स उच्चासणंसि वा समासणंसि वा चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति आसादणा सेहस्स, एताओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं तेत्तीसं आसायणाओ पण्णत्ताओत्ति बेमि ।४।। **आशातनाध्ययनं ३।।** सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं अट्ठविहा गणिसंपदा पं०, कयरा खलु थेरेहिं भगवंतेहिं अट्ठविहा गणिसंपदा पं०?, इमा खलु थेरेहिं भगवंतेहिं अट्ठविहा गणिसंपदा पं० तं०-आयारसंपया सुय० सरीर० वयण० वायणा० मति० पजोग० संगहपरिण्णा णाम अट्ठमा ।५। से किं तं आयारसंपया ?, २ चउव्विहा पं. तं०-संजमधुवजोगजुत्ते यावि भवति असंपगहिज्जए अणियता वित्ती वुद्धसीले यावि भवति, से तं आयारसंपदा ।६। से किं तं सुयसंपदा?, २ चउव्विहा पं०, तं०-बहुसुत्ते यावि भवति विचित्तसुत्ते० परिचित्तसुत्ते घोसविसुद्धिकारए०, से तं सुयसंपदा ।७। से किं तं सरीरसंपदा ? २ चउव्विहा पं० तं० आरोह परिणाह संपन्ने यावि भवति अणोतप्प सरीरे थिरसंघयणे बहुपडिपुण्णेंदिए यावि भवति, से तं सरीरसंपदा ।८। से किं तं वयणसंपदा?, २ चउव्विहा पं० तं०-आदिज्जवयणे यावि भवति महुरवयणे० अणिस्सियवयणे फुडवयणे, सेत्तं वयणसंपदा ।९। से किं तं वायणासंपदा ?, २ चउव्विहा पं० तं०-विजयं उद्दिसति विजयं वाएति परिनिव्वावियं वाएति अत्थणिज्जवए यावि भवति, से तं वायणासंपदा ।१०। से किं तं मतिसंपदा ?, २ चउव्विहा पं० तं०- उग्गहमतिसंपदा ईहा० अवाय० धारणा०, से किं तं उग्गहमइ०?, २ छव्विहा पं० तं०-खिप्पं ओगिण्हति बहुं० बहुविहं० धुव० आणिस्सियं० असंदिद्धं०, से तं उग्गहमती, एवं ईहामतीवि, एवं अवायमतीवि, से किं तं धारणमती ?, २ छव्विहा पं० तं०-बहुं धरतिं बहुविधं० पुराणं० दुद्धरं० अणिस्सियं० असंदिद्धं धरेति, से तं धारणामती, से तं मतिसंपदा ।११। से किं तं पओगसंपदा ?, २ चउव्विहा पं० तं०-आयं विदाय वादं पउंजित्ता भवति परिसं विदाय वादं पउजित्ता० खेत्तं विदाय वादं० वत्थुं०, से तं पओगमतिसंपदा ।१२। से किं तं संगहपरिण्णासंपदा ?, २ चउव्विहा पं० तं०-बहुजणपाउग्गत्ताए वासावासासु खित्तं पडिलेहित्ता भवति बहुजणपाओगत्ताए पाडिहारियं सेज्जासंथारयं ओगिण्हित्ता भवति कालेणं कालं समाणइत्ता भवति आहागुरू संपूइत्ता भवति, से तं संगहपरिण्णा ।१३। आयरियत्तो अंतेवासी इमाए चउव्विहाए विणयपडिवत्तीए विणइत्ता णिरिणत्तं गच्छति, तं०-आयारविणएणं सुयविणएणं विक्खेवणाविण,णं दोसनिग्घायणाविणएणं, से किं तं आयारविणए?, २ चउव्विहे पं० तं०-संजमसामायारी यावि भवति तवसामायारी० गणसामायारी० एगल्लविहारसामायारी० से तं आयारविणए, से किं तं सुयविणए ?, २ चउव्विहे पं० तं०-सुयं वाएति अत्थं० हियं० निस्सेसं०, से तं सुयविणए, से किं तं विक्खेवणाविणए ?, २ चउव्विहे पं० तं०-अदिट्ठं वाएति दिट्ठपुव्वगत्ताए विणएत्ता भवति, दिट्ठपुव्वगं साहम्मियत्ताए०, दिट्ठपुव्वगं सहेतुतं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्माओ धम्मे ठावित्ता भवति, तस्सेव धम्मस्स हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए अब्भुट्ठेत्ता भवति, से तं विक्खेवणाविणए, से किं तं दोसनिग्घायणाविणए ?, २ चउव्विहे पं० तं०-कुद्धस्स कोहं विणइत्ता भवति, दुट्ठस्स दोसं णिगिण्हित्ता भवति, कंखियस्स कंखं छिंदित्ता भवति, आया सुप्पणिधितो यावि भवति, से तं दोसनिग्घायणाविणए ।१४। तस्सेवंगुणजातीयस्स तेवासिस्स इमा चउव्विहा विणयपडिवत्ती भवति तं०-उवगरणउप्पायणता साहिल्लता वण्णसंजलणता भारपच्चोरूहणता, से किं तं उवगरणउप्पायणया ?, २ चउव्विहा पं० तं०-अणुप्पन्नाइं उवगरणाइं उप्पाएत्ता भवति, पोराणाइं उवगरणशइं सारक्खित्ता भवति, संगोवित्ता परित्तं जाणित्ता पच्चुद्धरित्ता भवति, आहाविहिं विसंभइत्ता भवति, सेत्तं उवगरणउप्पायणया, सें किं तं साहिल्लया ?, २ चउव्विहा पं० तं०- अणुलोमवइसहिते यावि भवति अणुलोमकायकिरियत्ता० पडिरूवकायसंफासणया० सव्वत्थेसु अप्पडिलोमया०, से तं साहिल्लया, से किं तं वण्णसंजलणया ?, २ चउव्विहा पं० तं०-आहातच्चाणं वण्णवाई भवति, अवण्णवाइं पडिहणित्ता, वण्णवाइं अणुबूहित्ता, आयवुड्ढासेवी यावि०, से तं वणसंजलणया, से किं तं भारपच्चोरूहणता ?, २ चउव्विहा पं० तं०-असंगहियपरिजणं संगिण्हित्ता, भवति, सेहं आयारगोयरं गाहित्ता भवति, साहम्मियस्स गिलायमाणस्स आहाथामं वेयावच्चे अब्भुट्ठित्ता भवति, साहम्मियाणं अधिकारणंसि उप्पण्णंसि तत्थ अणिस्सितोवस्सितो वसंतो अपक्खगाहए मज्झत्थभावभूते सम्मं ववहरमाणे तस्स अधिकरणस्स खामणविउसमणयाए सया समियं अब्भुट्ठित्ता भवति कहं (नु) साहम्मिया अप्पसद्दा अप्पझंझा अप्पकलहा अप्पकसाया अप्पतुमंतुमा संयमबहुला संवरबहुला समाहिबहुला अप्पमत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा एवं च णं विहरेज्जा, से तं भारपच्चोरूहणता, एसा खलु थेरेहिं भवगंतेहिं अट्ठविहा गणिसंपदा पण्णत्तत्ति बेमि ☆☆☆ ।१५॥ **गणिसंपदध्ययनं ४**॥☆☆☆ सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं दस चित्तसमाहिठणा पं०, कयरे खलु ते थेरेहिं०?, इमे खलु ते० दस चित्तसमाहिठाणा पं० तं०-तेणं कालेण० वाणियगामं नामं नयरे होत्था एत्थ णं नगरवण्णओ भाणियव्वो, तस्स णं वाणियगामनगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए दूइपलासे नामं चेइए होत्था चेइयवण्णओ भाणियव्वो, जियसत्तू राया, तस्स धारिणी देवी, एवं सव्वं समोसरणं भाणियव्वं जाव पुढवीसिलापट्टए, सामी समोसढे, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया ।१६। अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य आमंतित्ता एवं वयासी-इह खलु अज्जो ! निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा ईरियासमियाणं भासासमियाणं एसणासमियाणं आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमियाणं उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणियासमियाणं मणस० वयणस० काय० मणगुत्ताणं वयगुत्ताणं कायगुत्ताणं गुत्तिंदियाणं गुत्तबंभयारीणं आयट्ठिणं आयहियाणं आयजोईणं आयपरक्कमाणं पक्खियपोसहीए सुसमाहीपत्ताणं झियायमाणाणं समाइं दस चित्तसमाहिठाणाइं समुप्पज्जिज्जा, तं०-धम्मचिंता वा से असमुप्पण्णपुव्वा समुप्पज्जेज्जा सव्वं धम्मं जाणेत्तए, सण्णिणाणे वा से असमुप्पन्नपुव्वे समुप्पज्जेज्जा अहं सरात्ति अप्पणो पोराणियं जाइं सुमरित्तए, सुमिणदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा आहातच्चं सुमिणं पासित्तए, देवदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं पासित्तए, ओहिनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा ओहिणा लोयं जाणित्तए, ओहिदंसणष वा से असमुप्पन्नपुव्वे समुप्पज्जेज्जा ओहिणा लोयं पासित्तए, मणपज्जवनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा अंतो मणुस्सखेत्तेसु अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु सन्नीणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगए भावे जाणेत्तए, केवलनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा केवलकप्पं लोयालोयं जाणेत्तए, केवलदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा केवलकप्पं लोयालोयं पासित्तए, केवलमरणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा सव्वदुक्खप्पहीणाए ।१७। 'ओयं चित्तं समादाय, झाणं समणुपासति । धम्मे ठिओ अविमणो, निव्वाणमभिगच्छति ॥१॥ ण इमं चित्तं समादाय, भुज्जो लोयसि जायति । अप्पणो उत्तमं ठाणं, सण्णीणाणेण जाणति ॥२॥ अहातच्चं तु सुविणं, खिप्पं पासति संवुडे । सव्वं वा ओहं तरति, दुक्खादा य विमुच्चति ॥३॥ पंताइं भयमाणस्स, विचित्तं सयणासणं । अप्पाहारस्स दंतस्स, देवा दंसेति ताइणो ॥४॥ सव्वकामविरत्तस्स, खमाते

भयभेरवं । तओ से ओही भवति, संजयस्स तवस्सिणो ॥५॥ तवसाऽवहडलेसस्स, दंसणं परिसुज्झति । उड्ढं अहे य तिरियं च, सव्वं समणुपस्सति ॥६॥ सुसमाहडलेस्सस्स, अवितक्कस्स भिक्खुणो । सव्वओ विप्पमुक्कस्स, आया जाणति पज्जवे ॥७॥ जया से नाणावरणं, सव्वं होति खयं गयं । तया लोगमलोगं च, जिणो जाणति केवली ॥८॥ जया सेदंसणावरणं, सव्वं होति खयं गयं । तओ लोगमलोगं च, जिणो पासइ केवली ॥९॥ पडिमाए विसुद्धाए, मोहणिज्जे खयं गए । असेसं लोगमलोगं च, पासति सुसमाहिए ॥१०॥ जहा य मत्थयसूई, हयाए हम्मते तले । एवं कम्माणि हम्मंति, मोहणिज्जे खयं गए ॥११॥ सेणशवतिमि णिहते, जहा सेणा पणस्सति । एवं कम्मा पणस्संति, मोहणिज्जे खयं गए ॥१२॥ धूमहीणो जहा अग्गी, खिज्जते से निरिंधणे । एवं कम्मारि खीयंते, मोहणिज्जे खयं गए ॥१३॥ सुक्कमूले जहा रूक्खे, सिच्चमाणे ण रोहति । एवं कम्म ण रोहंति, मोहणिज्जे खयं गए ॥१४॥ जहा दड्ढाण बीयाणं, ण जायंति पुणंकुरा । कम्मबीए तहा दड्ढे (प्र० सु दड्ढेसु), न रोहंति भवंकुरा ॥१५॥ चिच्चा आरालियं बोंदिं, नामगोत्तं च केवली । आउयं वेयणिज्जं च, छित्ता भवति नीरए ॥१६॥ एवं अभिसमागम्म, चित्तमादाय आउसो !। सेणिसोधिमुवागम्म, आया सोहीमुवागए ॥१७॥ **-☆☆☆ त्ति बेमि ॥ चित्तसमाधिस्थानाध्ययनं ५॥☆☆☆** सुयं मे आउसंतेणं भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं इक्कारस उवासगपडिमाओ पं०, कयराओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं इक्कारस उवासगपडिमाओ पं०?, इमा खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं इक्कारस उवासगपडिमाओ पं० तं०-अकिरियावादी यावि भवति नाहियवाई नाहियपण्णे नाहियदिट्ठी नो सम्मावादी नो णितियावादी नोसंतिपरलोगवादी णत्थि इहलोए णत्थि परलोए णत्थि माया णत्थि पिया णत्थि अरिहंता नत्थि चक्कवट्टी णत्थि बलदेवा णत्थि वासुदेवा णत्थि नरया णत्थि नेरइया णत्थि सुक्कडदुक्कडाणं फलवित्तिविसेसे णो सुचिण्णा कम्मा सुचिन्नफला भवंति णो दुच्चिण्णा कम्मा दुच्चिण्णफला भवंति अफले कल्लाणपावए नो पच्चायंति जीवा णत्थि निरया णत्थि सिद्धी, से एवंवादी से एवंपण्णे एवंदिट्ठी एवंछंदरागभिणिविट्ठे आवि भवति, से य भवति महिच्छे महारंभे महापरिग्गहे अहम्मिए अहम्मसेवी अहम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्मपलोई अधम्मजीवी अधम्मपलज्जणे अधम्मसीलसमुदायारे अधम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ, हण छिंद भिंद विकत्तए अंतके लोहितपाणी चंडा रूद्दा खुद्दा साहस्सिया उक्कंचणमायाणियडिकूडकवडसातिसंपओगबहुला दुस्सीला दुप्परिचया दुरणुणेया दुव्वया दुप्पडियाणंदा निस्सीला । निग्गुणा णिम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासी असाहू सव्वाओ पाणाइवायाओ अप्पडिविरया जावजीवाए एवं जाव सव्वाओ कोहाओ सव्वाओ माणाओ सव्वाओ मायाओ सव्वाओ लोभाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुन्नाओ परपरिवादाओ अरतिरतीओ सव्वाओ मयामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ अप्पडिविरया जावजीवाए सव्वाओ कसायदंड (त) कट्ठण्हाणुव्वट्टणब्भंगणवण्णयमद्दणविलेवणसद्दफरिसरसरूवगंधमल्लालंकाराओ अप्पडिविरया जावजीवाए सव्वाओ सगडरहजाणजुग्गगिल्लिथिल्लिसीयासंदमाणियासयणासणयाणवाहणभोयणपवित्थरविधीतो अप्पडिविरया जावजीवाए असमिक्खियकारी सव्वाओ आसहत्थिगोमहिसगवेलयदासीदासकम्मकरपुरिसाओ अप्पडिविरया जावजीवाए सव्वाओ कयविक्कयमासद्धमासरूवगसंववहाराओ अप्पडिविरया जावजीवाए सव्वाओ हिरण्णसुवण्णधणधण्णमणिमुत्तियसंखसिलप्पवालाओ अप्पडिविरया जावजीवाए सव्वाओ कूडतुलकूडमाणाओ अप्पडिविरया सव्वाओ आरंभसमारंभाओ अप्पडिविरया सव्वाओ पयणपयावणाओ अप्पडिविरया सव्वाओ करणकारावणाओ अप्पडिविरया सव्वाओ कुट्टणपिट्टणतज्जणताडणवधबंधपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया जावजीवाए जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मंता परपाणपरियावणकडा कज्जंति ततोवि अप्पडिविरया जावजीवाए से जहानामए केइ पुरिसे कलमसूरतिलमुग्गमासनिप्फावकुलत्थअलिसंदगजवएवमादीहिं अयते कूरे मिच्छादंडं पउंजइ एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए तित्तिरवट्टगलावगकपोतकपिंजलमिगमहिमवराहगोगोकुम्मसरीसिवाइएहिं अयते कूरे मिच्छादंडं पउंजति, जाडविय से बाहिरिया परिसा भवति तं०-दासेति वा पेसेति वा भतएति वा भाइल्लेति वा कम्मकरएति वा भोगपुरिसेति वा तेसिंपिय णं अण्णयरगंसि अहालघुसयंसि अवराहंसि सयमेव गरूयं दंडं निवत्तेति तं०-इमं

For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दंडेह इमं मुंडेह इमह तज्जेह इमं तालेह इमं दुब्बंधणं करेह इमं नियलबंदणं इमं हडिबंधणं इमं चारगबंधणं इमं नियलजुयलसंकुडियमोडितयं इमं हत्थच्छिन्नयं इमं पादाच्छिन्नयं इमं कण्णच्छिन्नयं इमं नक्कच्छिन्नं इमं ओट्ठच्छिण्णं इमं सीसच्छिन्नं इमं मुखच्छिण्णयं इमं वइयच्छीइयं इमं हियउप्पाडियं एवं नयणदसणवयण० इमं जिब्भुप्पाडियं करेह इमं ओलंबिययं इमं घंसिययं इमं घोलितयं इमं सूलाइयं इमं सूलाभिण्णं इमं खारवत्तियं इमं दब्भवत्तियं इमं सीहपुच्छियं इमं वसभपुच्छियं इमं कड (दव) ग्गिदड्ढयं इमं काकणिमंसखातियं इमं भत्तपाणनिरूद्धयं करेह इमं जावज्जीवबंधणं करेह इमं अन्नतरेणं असुभेणं कुमारेणं मारेह, जाऽवि य से अब्भिंतरिया परिसा भवंति तं०-माताति वा पिताति वा भायाइ वा भइणीती वा भज्जजाति वा धूयाति वा सुण्हाति वा तेसिंपिय णं अण्णयरंसि अहालहुसगहसि अवराहंसि सयमेव गरूयं दंडं निव्वत्तेति तं०-सीतोदगवियडंसि कायं बोलित्ता भवति उसिणोदगवियडेण कायं ओसिंचित्ता भवति अगणिकाएण कायं उवडहिया भवति जोत्तेण वा वेत्तेण वा नेत्तेण वा कसेण वा छिवाडीए वा लताए वा पासाइं उद्दालेत्ता भवति दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा कायं आउट्टित्ता भवति, तहप्पगारे पुरिसजाए संवसमाणे दुम्मणे भवति, तहप्पगारे पुरिसजाते विप्पवसमाणे सुमणा भवति, तहप्पगारे दंडपासी (रूई) दंडगुरूए दंडपुरक्खडे अहिए अस्सिं लोयंसि अहिए परंसि लोगंसि ते दुक्खति सोयति एवं जूरति तिप्पति पिट्टति परितप्पति, ते दुक्खणसोयणजूरणतिप्पणपिट्टणपरितप्पणवधबंधपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया भवंति, एवमेव ते इत्थिकामेहिं मुच्छिया गढिया गिद्धा अज्झोववण्णा जाव वासाइं चउपंचमाइं छद्दसमाणि वा अप्पतरं वा भुज्जतरं वा कालं भुंजित्ता भोगभोगाइं पसवित्ता वेरायतणाइं संचिणित्ता बहुयाइं पावाइं कम्माइं ओसण्णं संभारकडेण कम्मुणा से जहानामए अयगोलेति वा सेलगोलेति वा उदयंसि पक्खिते समाणे उदगतलमइवइत्ता अहेधरणितलपतिट्ठाणे भवति एवामेव तहप्पगारे पुरिसजा, वज्जबहुले धुण्ण० पंक० वेर० दंभ० नियडि० आसायण० (असाय०) अयस० अप्पत्तिय० ओसण्णं तसपाणघाती कालमासे कालं किच्चा धरणितलमतिवतित्ता अहेनरगतलपतिट्ठाणे भवति, ते णं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधगारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसप्पहामेदवसामंसरूहिरपुयपडलचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतला असुई वीसा परमदुब्भिगंधा काउयअगणिवन्नाभा कक्खडफासा दुरहियासा नरगा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेदणा नो चेव णं नरएसु नेरइया निद्दायंति वा पलयायंति वा सुतिं वा रतिं वा धितिं वा मतिं वा उवलभंति, ते णं तत्थ उज्जलं विउलं पगाढं कक्कसं कडुयं रोद्दं दुक्खं चंडं तिव्वं तिक्खं तिव्वं दुरहियासं नरएसु नेरइया नरयवेयणठ पच्चणुभवमाणा विहरंति, से जहानामए रूक्खे सिया पव्वतग्गे जाए मूलच्छिन्ने अग्गेगरूए जतो निन्नं जतो दुग्गं जतो विसमं ततो पवडति एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए गब्भाओ गब्भं जम्माओ जम्मं मरणाओ मरणं दुक्खाओ दुक्खं दाहिणगामिए नेरइए कण्हपक्खिए आगमिस्साणं दुल्लभबोधिते यावि भवति, से तं अकिरियावादी।१८। से किं तं किरियावादी ?, २ भवति तं०-आहियवादी आहियपण्णे आयिदिट्ठी सम्मावाई नियावाई संतिपरलोयवादी अत्थि इहलोए अत्थि परलोए अत्थि पिया अत्थि माता अत्थि अरिहंता अत्थि चक्कवट्टी अत्थि बलदेवा अत्थि वासुदेवा अत्थि सुकडदुक्कडाणं कम्माणं फलवित्तिविसेसे सुचिन्ना कम्मा सुचिन्नफला भवंति दुच्चिण्णा कम्मा दुच्चिण्णफला भवंति सफले कल्लाणपावए पच्चायंति जीवा अत्थि नेरइया अत्थि देवा अत्थि सिद्धी, से एवंवादी एवंपन्ने एवंदिट्ठि एवं छंदरागभिनिविट्ठे आवि भवति, से भवति महिच्छे जाव उत्तरगामिए नेरइए सुक्कपक्खिए आगमेसाणं सुलभाबोहिए यावि भवति, से तं किरियवादी।१९। सव्वधम्मरूई यावि भवति, तस्स णं बहूइं सीलव्वयगुणवयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववसाइं ना सम्मं पट्ठवितपुव्वाइं भवंति, एवं दंसणसावओ पढमा उवासगपडिमा।२०। अहावरा दोच्चा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरूई यावि भवति, तस्स णं बहूइं सीलवयगुणवयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं सम्मं पट्ठविताइं भवंति, से णं सामाइयदेसावगासियं नो सम्मं अणुपालित्ता भवति, दोच्चा उवासगपडिमा।२१। अहावरा तच्चा उवासगपडिमा सव्वधम्मरूई यावि भवति, तस्स णं बहूइं सीलवयगुणवयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं सम्मं पट्ठविताइं भवंति, से णं सामाइयदेसावगासियं सम्मं अणुपालित्ता भवति, से णं

चाउद्दसअट्ठमीउद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं नो सम्मं अणुपालेत्ता भवति, तच्चा उवासगपडिमा।२२। अहावरा चउत्था उवासगपडिमा-सव्वधम्मरूई यावि भवति, तस्स णं बहूइं सीलवय जाव सम्मं पट्ठविताइं भवंति, से णं सामाइयदेसावगासियं सम्मं अणुपालेत्ता भवइ, से णं चाउद्दसअट्ठमिउद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेत्ता भवति, से णं एगराइयं उवासगपडिमं नो सम्मं अणुपालेत्ता भवति, चउत्था उवासगपडिमा।२३। अहावरा पंचमा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरूई यावि भवति, तस्स णं बहूइं सीलवय जाव सम्मं अणुपालेत्ता (पडिलेहियाइं) भवति, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जह० एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं पंच मासे विहरिज्जा, पंचमा उवासगपडिमा।२४। अहावरा छट्ठा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरूई यावि भवति जाव से णं एगराइयं उवासगपडिमं अणुपालित्ता भवति, से णं असिणाणए वियडभोई मउलीयकडे दिया वा राओ वा बंभयारी, सचित्ताहारे य से परिण्णाए ण भवति, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जह० एगाहं वा दुयाहं वा जाव उक्को० छम्मासा विहरिज्जा, छट्ठा उवासपडिमा।२५। अहावरा सत्तमा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरूई यावि भवति जाव राओ वा बंभयारी सचित्ताहारे से परिण्णाए भवति, आरंभे से अपरिण्णाए भवति, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जह० एगाहं वा दुयाहं वा जाव उक्को० सत्त मासे विहरिज्जा, सत्तमा उवासगपडिमा।२६। अहावरा अट्ठमा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरूई यावि भवति जाव राओ वा बंभयारी सचित्ताहारे से परिण्णाए भवति आरंभे से परिण्णाए भवति, पेसारंभे य से अपरिण्णाए भवति, से णं एयारूवेणं विंहारेणं विहरमाणे जाव एगाहं वा दुयाहं वा जाव उक्को० अट्ठ मासा विहरिज्जा, से तं अट्ठमा उवासगपडिमा।२७। अहावरा नवमा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरूयी यावि भवति जाव राओ (राओवरायं) बंभयारी सचित्ताहारे से परिण्णाए भवति आरंभे से परिण्णाए भवति पेसारंभे से परिण्णाए भवति, उद्दिट्ठभत्ते से अपरिण्णाए भवति, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जह० एगाहं वा दुयाहं वा जाव उक्कोसेणं नव मासा विहरिज्जा, से तं नवमा उवासगपडिमा।२८। अहावरा दसमा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरूई यावि भवति जाव उद्दिट्ठभत्ते से परिण्णाए भवति, से णं खुरमुंडए वा छिहलिधारए वा, तस्स णं आभ (इ) ट्ठस्स वा समाभट्ठस्स वा कप्पाति दुवे भासाओ भासित्तए तं०-जाणं वा जाणं अजाणं वा नो जाणं, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जह० एगाहं वा दुयाहं वा उक्को० दस मासा विहरिज्जा, दसमा उवासगपडिमा।२९। अहावरा एक्कारसमा उवासगपडिमा-सव्वधम्मरूई जाव उद्दिट्ठभत्ते से परिण्णाए भवति, से णं खुरमुंडए वा लुत्तसिरए वा गहियायारभंडगनेवत्थे जारिसे समणाणं निग्गंथाणं धम्मे पं० तं सम्मं काएण फासेमाणे पालेमाणे पुरओ जुगमायाए पेहमाणे दट्ठूण तसे पाणे अदट्ठु पाए रीएज्जा साहट्टु पाए रीएज्जा वितिरिच्छं वा पायं कट्टु रीएज्जा, सति परक्कमे संजतामेव परिक्कमेज्जा, नो उज्जुयं गच्छेज्जा, केवलं से नायए पेज्जबंधणे अवोच्छिण्णे भवति, भवं से कप्पति नायविहिं एत्तए, तत्थ से पुव्वागमणेणं पुव्वाउत्ते चाउलोदणे पच्छाउत्ते भिलिंगसूवे कप्पति से जालोदणे पडिगाहित्तए नो से कप्पइ भिलिंगसूवे पडिगाहित्तए, तत्थ णं से पुव्वागमणेणं दोवि पुव्वाउत्ताइं पुव्वाउत्ते भिलिंगसूवे पच्छाउत्ते चाउलोदणे कप्पति से भिलिंगसूवे पडिगाहित्तए नो से कप्पति चोउलोदणे पडिगाहित्तए, तत्थ णं से पुव्वागमणेणं दोवि पुव्वाउत्ताइं कप्पंति से दोवि पडिगाहित्तए, जे से तत्थ पुव्वागमणेणं पच्छाउते नो से कप्पइ पडिगाहित्तए, तत्थ णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठस्स कप्पइ एवं वइत्तए समणोवासगस्स पडिमामपडिवण्णस्स भिक्खं दलयह, एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणं केइ पासित्ता वदेज्जा-के आउसो ! तुमं वत्तव्वं सिया ?, समणोवासए पडिमं पडिवज्जिते अहमंसीति वत्तव्वं सिया, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे जह० एगाहं वा दुयाहं वा वियाह वा उक्को० एक्कारस मासे विहरेज्जा, एगारसमा उवासगपडिमा, एताओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं एगारस उवासगपडिमाओ पण्णत्ताओत्ति बेमि।☆☆☆ ३०॥ **श्रमणोपासकप्रतिमाध्याययनं ६॥** ☆☆☆ सुयं मे आउसंतेण भगवया एवमक्खयायं-इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं बारस भिक्खुपडिमाओ पं०, कयराओ खलु ताओ जाव पं०?, इह खलु एताओ पं० तं०-मासिया भिक्खुपडिमा दोमासिया भिक्खुपडिमा तिसामिया भिक्खुपडिमा चउमासिया पंचमासिया छम्मासिया सत्तमासिया पढमा सत्तराइंदिया दुच्चा सत्तराइंदिया तच्चा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तराइंदिया अहारोइं- (२४६) दिया एगराइंदिया भिक्खुपडिमा ।३१। मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे कई उवसग्गा उप्पज्जंति तं०-दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा ते उप्पण्णे सम्मं सहति खमति तितिक्खति अहियासेति, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पइ एगा दत्ती भोयणस्स पडिगाहित्तए एगा पाणगस्स, अण्णाउंछं सुद्धोवहडं निज्जूहित्ता बहवे दुप्पयचउप्पयसमणमाहणअतिहिकिविणवणिमगा, कप्पइ से एगस्स भुंजमाणस्स पडिगाहित्तए, णो दुण्हं णो तिण्हं णो चउण्हं णो पंचण्हं णो गुव्विणीए णो बालवच्छाए णो दारगं पेज्जमाणीए नो अंतो एलुयस्स दोवि पाए साहट्टु दलमाणीए नो बाहिं एलुयस्स दोवि पाए साहट्टु दलमाणीए, एगं पाए अंतो किच्चा एगं पायं बाहिं किच्चा एलुयं विक्खंभइत्ता एवं दलयति एवं से कप्पति पडिगाहित्तए, एवं से नो दलयति एवं से नो कप्पइ पडिगाहित्तए, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स तओ गोयरकाला पं० तं०-आदिसे मज्झिमे चरिमे, आदि चरेज्जा णो मज्झे चरिज्जा णो चरिमे चरिज्जा, मज्झे चरेज्जा नो आइ चरेज्जा नो चरिमे चरेज्जा, चरिमं चरेज्जा नो आदिमं चरेज्जा नो मज्झे चरेज्जा, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स छव्विहा गोयरचरिया पं० तं०-पेला अद्धपेला गोमुत्तिया पयंगवीथिका संबुकावट्टा गंतुंपच्चागया, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स जत्थ णं केइ जाणति कप्पइ से तत्थ एगराइयं वसित्तए, जत्त णं केइ न जाणइ से कप्पति तत्थ एगरायं वा दुरायं वा वसित्तए, नो कप्पइ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वत्थए, जं तत्थ एगरायाओ वा दुरायाओ वा परं वसति से संतरा छेदे वा परिहारे वा, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स कप्पंति चत्तारि भासाओ भासित्तए तं०-जायणी पुच्छणी अणुण्णवणी पुट्ठस्स वागरणी, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स० कप्पंति तओ उवस्सगा पडिलेहित्तए तं०- अहे आरामगिहं अहे वियडगिहं अहे रूक्खमूलगिहं, मासियण्णं०कप्पइ तओ उवस्सया उवायणावित्तए तं चेव, मासियं णं० कप्पइ तओ संथारगा पडिलेहित्तए तं०-अहे पुढवीसिलं वा कट्ठसिलं वा आहासंथडमेव, मासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स कप्पइ तओ संथारा अणुण्णवेत्तए तं चेव, मासियं णं० कप्पंति तओ संथारा ओवायणावित्तए तं चेव, मासियं० इत्थी उवस्सयं उवागच्छिज्जा से इत्थी एवं पुरिसे णो से कप्पइ तं पडुच्च निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, मासियं० जाव पडिवण्णस्स केइ उवस्सयं अगणिकाएण झामेज्जा नो से कप्पइ तं पडुच्च निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, तत्थ णं केइ वधाय असिं गहाय आगच्छेज्जा जाव से नो कप्पइ पडुच्च अलंबित्तए वा पलंबित्तए वा, कप्पइ से आहारियं रीइत्तए, मासियं णं भिक्खुपडिमं जाव पायंसि थाणू वा कंटए वा हीरए वा सक्करा वा अणुपविसेज्जा नो कप्पइ से नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा कप्पइ से आहारियं रीइत्तए, मासियं णं जाव अच्छिंसि वा० पाणाणि वा बीयाणि वा रए वा परियावज्जिज्जा नो से कप्पइ नीहरित्तए वा विसोहित्तए वा, कप्पइ से आहारीयं रीइत्तए, मासियं णं० जत्थेव सूरिए अत्थमेज्ज तत्थेव जलंसि वा थलंसि वा दुग्गंसि वा निण्णंसि वा पव्वयंसि वा विसमंसि वा गड्डाए वा दरीए वा कप्पइ से तं रयणिं तत्थेव उवायणावित्तए, नो से कप्पइ पदमवि गमित्तए, कप्पइ से कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते पाईणाभिमुहस्स वाद हिणाभिमुहस्स वा पडीणाभिमुहस्स वा उत्तराभिमुहस्स वा आहारीयं रीइत्तए, मासियं णं० नो कप्पइ अणंतरहियाए पुढवीए निद्दाइत्तए वा पयलाइत्तएवा, केवली बूया-आदाणमेयं, से तत्थ निद्दायमाणे वा पयलायमाणे वा हत्थेहिं भूमिं परामुसेज्जा अहाविधिमेव ठाणं ठाइत्तए निक्खमित्तए वा, उच्चारपासवणेणं उब्बाहिज्जेज्जा नो से कप्पइ ओगिण्हित्तए, कप्पइ से पुव्वपडिलेहितए थंडिले उच्चारपासवणं परिट्ठवित्तए, तमेव उवस्सयं आगम्म अहाविधिं ठाणं ठाइत्तए, मासियं० नो कप्पइ ससरक्खेहिं पाएहिं (काएहिं प्र०) गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा नि० पवि०, अह पुण एवं जाणेज्जा-स सरक्खे सेअत्ताए वा जल्लत्ताए वा मलत्ताए वा पंकत्ताए वा विद्धत्थे (परिणए) से कप्पइ गाहावइकुलं भत्ताए वा पाणाए वा निक्ख० पवि०, मासियं० नो कप्पइ सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा हत्थाणि वा पायाणि वा दंताणि वा अच्छीणि वा मुहं वा उच्छोलित्तए वा पधोवित्तए वा णण्णत्थ लेवालेवेण वा, मासियं णं० ना कप्पइ आसस्स वा हत्थिस्स वा गोणस्स वा महिसस्स वा कोलस्स वा साणस्स वा (कोलसुणगस्स वा) दुट्ठस्स वा वग्घस्स वा० आवडमाणस्स पदमवि पच्चोसक्कित्तए, अदुट्ठस्स आवडमाणस्स कप्पति जुगमित्तं पच्चोसक्कित्तए, मासियं णं० नो कप्पइ छायाओ सीयंति उण्हं इत्तए उण्हाओ उण्हंति नो छायं एत्तए, जं जत्थ जया सिया तं तत्थ अहियासए, एवं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खलु एसा मासिया भिक्खुपडिमा अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासित्ता पालित्ता सोहित्ता तीरित्ता किट्टित्ता आराहित्ता आणाए अणुपालित्ता भवति।३२। दोमासियं णं भिक्खुपडिमं० निच्चं वोसट्ठकाएं तं चेव जाव दो दत्ती, तिमासियं० तिण्णि दत्तीओ चाउमासियं० चत्तारि दत्तीओ पंचमासियं पंच दत्तीओ छमासियं छ दत्तीओ सत्तमासियं सत्त दत्तीओ, जत्थ जत्तिया दत्तीओ।३३। पढमं सत्तराइंदियं णं भिक्खूपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्सस निच्चं वोसिट्ठकाए जाव अहियासेइ, कप्पइ से चउत्थेणं, भत्तेणं अपाणएणं बहिया गामस्स वा जाव रायहाणीए वा उत्ताणगस्स वा पासेल्लगस्स वा नेसज्जियस्स वा ठाणं ठाएत्तए, तत्त दिव्वमाणुसतिरिक्खजोणिया उवसग्गा समुप्पज्जिज्जा, ते णं उवसग्गा० पयलिज्ज वा पवडिज्ज वा नो से कप्पइ पयलित्तए वा पवडित्तए वा, तत्थ से उच्चारपासवणे उब्बाधेज्जा नो से कप्पइ उच्चारपासवणं ओगिण्हेत्तए, कप्पइ से पुव्वपडिलेहियंसि थंडिलंसि उच्चारपासवणं परिट्ठवित्तए, अहाविधिमेव ठाणं ठाइत्तए, एसा खलु पढमा सत्तराइंदिया भिक्खुपडिमा अहासुत्तं जाव आणाए अणुपालित्ता भवति, एवं दोच्चा सत्तराइंदियावि, नवरं गोदुहियाए वा वीरासणियस्स वा अंबखुज्जस्स वा ठाणं ठाइत्तए सेसं नं चेव जाव अणुपालिता भवति, एवं तच्चा सत्त राइंदियावि भवति, नवरं गोदुहियाए वा विरासणीयस्स वा अंबखुज्जस्स वा ठाणं ठाइत्तए, एवं चेव जाव अणुपालिता भवति।३४। एवं अहोरातियावि, नवरं छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं बहिया गामस्स वा जाव रायहाणियस्स वा ईसिं दोवि पाए साहट्टु वग्घारियपाणिस्स ठाणं ठाइत्तए, सेसं तं चेव जाव अणुपालिता भवति, एगराइं णं भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स निच्चं वोसिट्ठकाए जाव अहियासेति, कप्पइ से अट्ठमेण भत्तेणं अपाणएणं बहिया गामस्स वा जाव रायहाणीए वा ईसिपब्भारगएणं काएणं एगपोग्गलट्ठिताए दिट्ठीए अणिमिसनयणे अहापणिहितेहिं गत्तेहिं सव्विदिएहिं गुत्ते दोवि पाए साहट्टु वग्घारियपाणिस्स ठाणं ठाइत्तए, तत्थ से दिव्वमाणुसतिरिच्छजोणिया जाव अहाविधिमेव ठाणं ठाइत्तए, एगराइं णं भिक्खुपडिमं अणणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तओ ठाणा अहियाए असुभाए अखमाए अणिस्सेसाए अणाणुगामियत्तशए भवंति, तं०-उम्मायं लभेज्जा दीहकालियं वा रोगायंकं पाउणेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ वा भंसेज्जा, एगराइयं णं भिक्खुपडिमं सम्मं अणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तओ ठाणा हियाए जाव आणुगामियत्ताए भवंति, तं०-ओहिणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा मणपज्जवनाणे वा से समुप्पज्जेज्जा केवलनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जेज्जा, एवं खलु एसा एगराइया भिक्खुपडिमा अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएण फासिता पालिता सोहिता तीरिता किट्टिता आराहिता आणाए अणुपालिता यावि भवति, एताओ खलु ताओ थेरेहिं भगवंतेहिं बारस भिक्खुपडिमाओ पण्णत्ताओत्ति बेमि ☆☆☆ ।३५॥ **भिक्षुप्रतिमाध्ययनं ७॥**☆☆☆ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे होत्था तं०-हत्थुत्तराहिं चुए चइत्ता गब्भह वक्कंते, हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए, हत्थुत्तराहिं जाए, हत्थुत्तराहिं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए, हत्थुत्तराहिं अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केव,वरनाणदंसणे समुप्पन्ने, साइणा परिनिव्वुए भयवं, जाव भुज्जो २ उवदंसेइत्ति बेमि। ☆☆☆३६॥ **पर्युषणाकल्पाध्ययनं ८॥** ☆☆☆ तेणं कालेणं० चंपा नामं नगरी होत्था वण्णओ, पुण्णभद्दे चेइए, कोणिए राया, धारिणी देवी, सामी समोसढे, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया, अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे बहवे निग्गंथा य निग्गंथीओ य आमंतेत्ता एवं वदासी-एवं खलु अज्जो! तीसं मोहणीयट्ठाणाइं इमाइं इत्थी वा पुरिसो वा अभिक्खणं २ आयरमाणे वा समायरमाणे वा मोहणिज्जत्ताए कम्मं पकरेति, तं०-'जे केवि तसे पाणे, वारिमज्झे विगाहिया। उदएणऽकमम मारेति, महामोहं पकुव्वई ॥१८॥ सीसावेढेण जे केइ, आवेढेइ अभिक्खणं। तिव्वासुभसमायारे, महामोहं० ॥१९॥ पाणिणा संपिहित्ताणं, सोयमावरि पाणिणं। अंतो नदंतं मारेइ० ॥२०॥ जायतेयं समारब्भ, बहु ओरूभियाजणं। अंतो धूमेण मारेइ० ॥२१॥ सीसंमि जे पहणंति, उत्तमंगंमि चेयसा। विभज्ज मत्थयं फाले० ॥२२॥ पुणो २ पणिधीळ, हणित्ता (बाले) उवहसे जणं। फलेण अदुवा दंडेणं० ॥२३॥ गूढायारी निगूहिज्जा, मायं मायाए छायए। असच्चवाई निण्हाइ० ॥२४॥ धंसेइ जो अभूएणं, अकम्मं अत्तकम्मुणा। अदुवा तुममकासित्ति० ॥२५॥ जाणमाणो पुरिसओ, सच्चमोसाइ भासति। अक्खीणझंझे पुरिसे० ॥२६॥ अणायगस्स नयवं, दारं तस्सेव धंसिया। विउलं विक्खोभइत्ताणं, किच्चाणं पडिबाहिरं ॥२७॥ उवगसंतंपि झंपित्ता, पडिलोमाहिं वग्गुहिं। भोगभोगे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वियारेति० ॥२८॥ अकुमारभूए जे केइ, कुमारभूएत्तिऽहं वए। इत्थीविसयगेहीए० ॥२९॥ अबंभयारी जे केई, बंभयारीतिऽहं वए। गद्दभेव गव मज्झे, विस्सरं नदती नदं ॥३०॥ अप्पणो अहिए बाले, मायामोसं बहुं भसे। इत्थीविसगिद्धीए० ॥३१॥ जंनिस्सिए उव्वहती, जससाऽभिगमेण य। तस्स लुब्भइ वित्तमिं० ॥३२॥ ईसरेण अदुवा गामेणं, अणीसरे ईसरीकए। तस्स संपरिगहित (यहीण) स्स, सिरी अतुल्लमागया ॥३३॥ ईसादोसेण आइट्ठे, कलुसाउलचेयसे। जे अंतरायं चेएइ० ॥३४॥ सप्पी जहा अंडपुडं, भत्तारं जो विहिंसइ। सेणावतिं पसत्थारं० ॥३५॥ जे नायगं च रट्ठस्स, नेयारं निगमस्स वा। सेट्ठिं बहुरवं हंता० ॥३६॥ बहुजणस्स नेतारं, दीवं ताणं च पाणिणं। एयारिसं नरं हंता० ॥३७॥ उवट्ठियं पडिविरयं, संजयं सुसमाहियं। विउक्कम्म धम्माओ भंसेति० ॥३८॥ तहेवाणंतनाणीणं, जिणाणं वरंदसिणं। तेसिं अवण्णवं बाले० ॥३९॥ णेयाउयस्स मग्गस्स, दुट्ठे अवहर (रज्झ) ती बहुं। तं तिप्पयंतो भावेति० ॥४०॥ आयरियउवज्झाया, सुयं विणयं च गाहिए। ते चेव खिंसती बाले० ॥४१॥ आयरिउवज्झायाणं, सम्मं न पडितप्पई। अपरिपूयए थद्धे० ॥४२॥ अबहुस्सएवि (य) जे केई, सुएणं पविकत्थई। सज्झायवादं वदति० ॥४३॥ अतवस्सी य जे केई, तणेवं पविकत्थई। सव्वलोगपरे तेणे० ॥४४॥ साहारणट्ठा जे केइ, गिलाणंमि उवट्ठिए। पभू न कुव्वई किच्चं, मज्झंपि से ण कुव्वति ॥४५॥ सढे नियडिपण्णाणे, कलुसाउलचेयसे। अप्पणो य अबोहीए० ॥४६॥ जे कहाअधिकरणाइं, संपउंजे पुणोप णो। सव्वतित्थाण भेयाए० ॥४७॥ जे य आहम्मिए जोए, संपउंजे पुणो पुणो। सहाहेउं सहीहेउं० ॥४८॥ जे य माणुस्सए भोए, अदुवा पारलोइए। तेऽतिप्पयंतो आसयती० ॥४९॥ इड्ढी जुत्ती जसो वण्णो, देवाणं बलवीरियं। तेसिं अवण्णवं बाले० ॥५०॥ अप्पसमाणो पस्सामि, देवे जक्खे य गुज्झगे। अण्णाणो जिणपूयट्ठी० ॥५१॥ एते मोहगुणा वुत्ता, कम्मत्ता चित्तवद्धणा। जे उ भिक्खू विवज्जेज्जा, चरित्त (ज्ज) त्तगवेसए ॥५२॥ जंपि जाणेइ जो पुव्वं, किच्चाकिच्चं बहुं जढं। तं वन्ता ताणि सेविज्जा, जेहिं आयारवं सिया ॥५३॥ आयारगुत्ते सुद्धप्पा, धम्मे ठिच्चा अणुत्तरे। तत्तो वमे सए दोसे, विसमासीविसो जहा ॥५४॥ सुज्झंतदोसे सुद्धप्पा, धम्मट्ठी विदितापरे। इहेव लभते किर्त्तिं, पेच्चा य सुगंति वरे ॥५५॥ एवं अभिसमागम्म, सूरा दढपरक्कमा। सव्वमोहविणिम्मुक्का, जातिमरणमतिच्छिय ॥५६॥ त्ति बेमि ☆☆☆॥

मोहनीयस्थानाध्ययनं ९॥ ☆☆☆ तेणं कालेणं० रायगिहे नामं नयरे होत्था वण्णओ, गुणसिलए चेइए, रायगिहे नगरे सेणि, नाम राया होत्था रायवण्णओ, एवं जहा आवाइए जाव चेल्लणाए सद्धिं० विहरइ ।३७। तए णं से सेणिए राया अण्णया कयाई ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सिरसाण्हाते कंठमालेकडे आविद्धमणिसुवण्णे कप्पियहारद्धहारे तिसरयपालंबपलंबमाणकडिसुत्तयसुकयसोहे पिणद्धगेविज्जे अंगुलेज्जग जाव कप्परूक्खए चेव अलंकियविभूसिए नरिंदे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं जाव ससिव्व पियदंसणे नरवई जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ त्ता सीहासणवरंसि पुरच्छाभिमुहे निसीयइ त्ता कोडुंबियपुरिसे सददावेइ त्ता एवं वदासी-गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया ! जाइं इमाइं रायगिहस्स नगरस्स बहिया तं०-आरामाणि य उज्जाणाणि य आसणाणि य आयतणाणि य देवकुलाणि य संभाओ य पवाओ य पणियगिहाणि य पणियसालाओ य छुहाकम्मंताणि य वाणियकम्मंताणि य एवं कट्ठकम्मंताणि य इंगालकम्मंताणि य वणकम्मंताणि य दब्भकम्मंताणि य जे तत्थेव महत्तरगा आणता चिट्ठंति ते एवं वदह-एवं खलु देवाणुप्पिया ! सेणिए राया भंभासारे आणवेति-जया णं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे जाव संपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूतिज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे इहमागच्छेज्जा तया णं देवाणुप्पिया ! तुमे भवगओ महावीरस्स अहापुडिरूवं उग्गहं अणुजाणह त्ता सेणियस्स रण्णो भंभासारस्स एयमट्ठं पियं निवेएह, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा भंभासारेण एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव हियया जाव एवं सामित्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति त्ता सेणियस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमंति त्ता रायगिहनगरस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति त्ता जाइं इमाइं भवंति रायगिहस्स बहिया आरामणि वा जाव जे तत्थ महयरगा आण (अण्ण) ता चिट्ठंति ते एवं वदंति जाव सेणियस्स रण्णो एयमट्ठं पियं निवेदिज्जा भे पियं भवतु, दोच्चंपि एवं वदंति त्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥३८॥ तेणं कालेणं० समणे भगवं महावीरे दिगरे जाव गामाणुगामं दूइज्जमाणे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तते णं रायगिहे नगरे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिंघाडगतिगचउक्कचच्चर जाव परिसा पडिगया जाव पज्जुवासैति, तते णं महत्तरगा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति त्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति त्ता नामगोयं पुच्छंति त्ता नामगोत्तं पधारेंति त्ता एगयओ मिलंति त्ता एगंतमवक्कमंति त्ता एवं वदासी-जस्स णं देवाणुप्पिया ! सेणिए राया दंसणं कंखइ जस्स णं देवाणुप्पिया ! सेणिए राया दंसणं पीहेति जस्स णं देवाणुप्पिया ! सेणिए राया दंसणं पत्थेति जस्स णं देवाणुप्पिया ! सेणिए राया दंसणं अभिलसति जस्स णं देवाणुप्पिया ! सेणिय राया नामगोत्तस्सवि सवणयाए हट्ठतुट्ठ जाव भवति से णं समणे भगवं महावीरे आदिगरे तित्थगरे जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं वहिरमाणे इहमागयाते इह संपण्णे इह समोसढे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! सेणियस्स रण्णरो एयमट्ठं पियं निवेदेमो पियं भे भवतुत्तिकट्टु एयमट्ठं अण्णमण्णस्स पडिसुणंति त्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छंति त्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सेणियस्स रण्णो गिहे जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छन्ति त्ता सेणियरायं करतलपरिग्गहियं जाव जएणं विजएणं वद्धावेंति त्ता एवं वयासी-जस्स णं सामी ! दंसणं कंखति जाव से णं समणे भगवं महावीरे गुणसिलए चेइए जाव विहरइ, तं णं देवाणुप्पियाणं पियं निवेदामो पियं भे भवतु ।३९। तते णं से सेणिए राया तेसिं पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठजावहियए सिंहासणाओ अब्भुट्ठेति त्ता जहा कोणिओ जाव वंदसि नमंसति त्ता ते पुरिसे सक्कारेति संमाणेति त्ता विउलं जीवियारिहं पीतिदाणंदलयति त्ता पडिविसजजेइ त्ता नगरगुत्तिए सद्दावेइ त्ता एवं वदासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायगिहं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं आसियसंमज्जिओवलित्तं जाव पच्चप्पिणंति ।४०। तए णं से सेणिए राया बलवाउयं सद्दावेत्ति त्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हयगयरहजोहकलियं चाउरंगिणिं सेन्नं सन्नाहेह जाव सेऽपि पच्चप्पिणंति, तते णं से सेणिए राया जाणसालियं सद्दावेति वा एवं वदासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! धम्मियं, जाणपवरं जुत्तामेव उवट्ठावेह त्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, तते णं से जाणसालिए सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठजावहिययेजेणेव जाणसाला तेणेव उवागच्छइ त्ता जाणसालं अणुपविसइ त्ता जाणं पच्चुवेक्खइ त्ता पच्चोरूभति त्ता जाणगं संपमज्जइ त्ता जाणगं णीणेति त्ता जाणगं संवट्टइ त्ता दूसं पवीणेति त्ता जाणाइं समलंकरेइ त्ता जाणाइं वरभंडमंडियाइं करेइ त्ता जेणेव वाहणसाला तेणेव उवागच्छइ त्ता वाहणसालं अणुपविसति त्ता वाहणाइं पच्चुविक्खति त्ता वाहणाइं संपमज्जइ त्ता वाहणाइं अप्फालइ त्ता वाहणाइं णीणेति त्ता दूसे पविणेति त्ता वाहणाइं अलंकारेति त्ता वाहणाइं वराभरणमंडियाइं करेति त्ता जाणगं जोएति त्ता वट्टिमोगाहेति त्ता पओगलट्ठिं पओगधरए य समं आरोहइ त्ता जेणे व सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ त्ता करयल जाव एवं वदासी-जुत्ते ते सामी ! धम्मिए जाणपवरे, आइट्ठा भदंत ! वग्गुगाही ।४१। तए णं सेणिए राया भंभासारे जाणसालियस्स अंतिएं एयमट्ठं सोच्चा निमस्स हट्ठतुट्ठ जाव मज्जणघरं अणुपविसइ जाव कप्परूक्खए चेव अलंकियविभूसिए नरिंदे जाव मज्जणघराओ पडिनिक्खमति त्ता जेणेव चेल्लणा देवी तेणेव उवागच्छइ त्ता चिल्लणं देवीं एवं वदासी-एवं खलु देवाणुप्पिए ! समणे भगवं महावीरे आदिगरे तित्थगरे जाव पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तं महाफलं खलु देवाणिप्पिए ! तहारूवाणं अरहंताणं जाव तं गच्छामो देवाणूप्पिए ! समणं भगवं महावीरं वंदामे नमंसामो सक्कारेमो संमाणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेमो एतं णं इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सति ।४२। तते णं सा चिल्लणा देवी सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव पडिसुणेति त्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ त्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता, किं ते ?, वरपायपत्तनेउरमणिमेहलाहाररइयउव्विहियक-डगक्खडुएगावलिकंठमुरजतिसरयत-वरवलयहेमसुत्तयकुंडलुज्जोवियाणणा रयणभूसियंगी चीणंसुयवत्थपवरपरिहिया दुगुल्लसुकुमालकंतरमणिज्जउत्तरिज्जा सव्वोउयसुरभिकुसुमसुंदरइयपलंबसोहंतकंतविकसंतचित्तमाला वरचंदणचच्चिया वराभरणभूसियंगी कालागुरूधूवधूविया सिरीसमाणवेसा बहूहिं खुज्जाहिं चिलातियाहिं जाव महत्तरगाविंदपरिक्खित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ ।४३। तए णं से सेणिए राया चिल्लए देवीए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहति सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं उववाइयगमेणं जाव पज्जुवासइ, एवं चेल्लणावि जाव महत्तरगाविंदपरिक्खित्ता जेणेव समणे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति त्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति त्ता सेणियं रायं पुरओ काउं ठितिया चेव पुज्जवासति, एवं चेल्लणावि जाव महत्तरगाविंदपरिक्खित्ता जेणेव समणं भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छतित्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमं सतित्ता सेणियं रायं पुरओ काउं ठितिया चेव पुज्जवासति ततेणं समणे भगवं महावीरे सेणियस्स रण्णो भंभासारस्स चिल्लणाए य देवीए तीसे महतिमहालियाए परिसाए चइपरिसाए इसि० मुणि० देव० मणुस्स० देवी० अणेगसयाए जाव धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया, सेणिओ राया पडिगओ ।४४।। तत्थेगतियाणं निग्गंथाण य निग्गंथीण य सेणियं रायं चिल्लणं देवीं पासित्ताणं इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था अहो णं सेणिए राया महड्ढिए जाव महासोक्खे जे णं ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्तेसव्वालंकारविभूसिते चिल्लणाए देवीए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति, न मे दिट्ठे देवे देवलोगंमि, सक्खं खलु अयं देवे, जइ इमस्स तवनियमबंभचेरवासस्स फलवित्तिविसेसे अत्थि तया वयमवि आगमेस्साए इमाइं उरालाइं एयारूवाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरामो सेतं साह, अहो णं चिल्लणा देवी महिड्ढिया जाव महासोक्खा जा णं ण्हाया कयबलिकम्मा जाव सव्वालंकारविभूसिया सेणिएणं रन्ना सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ, ण मे दिट्ठाओ देवीओ देवलोए सक्खं खलु इयं देवी, जइ इमस्स सुचरियस्स तवनियमबंभचेरवासस्स कल्लाणफलवित्तिविसेसे अत्थि वयमवि गणिस्साणं इमाइं एयारूवाइं उरालाइं जाव विहरामो, सेतं साहुणी ।४५। अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे बहवे निग्गंथा य निग्गंथीओ य आमंतित्ता एवं वयासी-सेणियं रायंचिल्लणं देवीं च पासित्ता इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-अहो णं सेणिए राया महिड्ढिए जाव से तं साहू, अं णं चिल्लणा देवी महड्ढिया सुंदरा जाव से तं साहुणी, से णूणं अज्जो ! अत्थे समट्ठे ?, हंता अत्थि, एवं खलु समणाउसो ' मए धम्मे पण्णत्ते इणमेव निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे पडिपुण्णे केवलिए संसुद्धे णेआउए सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे अवितहमविसंधिं सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे इत्थं ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वाइंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति, जस्स णं धम्मस्स निग्गंथे सिक्खाए उवट्ठिए विहरमाणे पुरा दिगिंछाए पुरा पिवासाए पुरा वातातवेहिं पुट्ठेहिं विरूवरूवेहिं परिसहोवसग्गेहिं उदिण्णकामजाए यावि विहरेज्जा, से य परक्कमेज्जा से य परक्कममाणे पासेज्जा जे इमे उग्गपुत्ता महामाउया भोगपुत्ता महामाउया तेसिं णं अण्णतरस्स अतिजायमाणस्स वा निज्जायमाणस्स वा पुरओ महं दासीदासकिंकरकम्मकरपुरिसपदायपरिक्खित्तं छत्तभिंगारं गहाय निग्गच्छंति तदणंतरं च णं पुरओ महाआसा आसवरा उभओ तेसिं नागा नागवरा पिट्ठओ रथा रथवरा रथसंगिल्ली सेन्नं उद्धरियसेयच्छत्ते अब्भुग्गयभिंगारे पगहियतालविंटे पवियण्णसेयचामरवालवरणीए अभिक्खणं २ अतिजाति य निज्जाति य सप्पभा, सपुव्वावरं च णं ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सव्वालंकारविभूसिए महतिमहालियाए कूडागारसालाए महतिमहालयंसि सिंहासणसि जाव सव्वरातिएणं जोइणा झियायमाणेणं इत्थिगुम्मपरिवुडे (२४७) महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलताल-तुडियघणमुयंगमद्दलपडुप्पवाइयवरवेणं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, तस्स णं एगमवि आणवेमाणस्स जाव चत्तारिपंच अवुत्ता चेव अब्भुट्ठेति-भणह देवाणुप्पिया ! किं करेमो ? किं आहरेमो ? किं उवणेमो ? किं आचिट्ठामो ? किं भे हियइच्छियं ? किं ते आसगस्स सदति, जं पासित्ता निग्गंथे निदाणं करेति जइ इमस्स तवनियमबंभचेरवासस्स जाव साहू, एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथे निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइयअप्पडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अणतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवति महिड्ढिएसु जाव चिरट्ठिइएसु, से णं तत्थ देवे भवति महिड्ढिए जाव चिरट्ठिइए, ततो देवलोगाओ आउक्खएणं० अणंतरं चयं चइत्ता जे इमे उग्गपुत्ता महामाउया भोगपुत्ता महामाउया तेसिं णं अण्णतरंसि कुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाति, से णं तत्थ दारए भवति सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे, तते णं से दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सयमेव पेइयं दायं पडिवज्जति, तस्स णं अइजायमाणस्स वा णिज्जायमाणस्स वा पुरओ महं जाव दासीदास० किं ता आसगस्स सदति ?, तस्स णं तहप्पगारस्स पुरिसजायस्स तहारूवे समणे वा माहणे वा उभयकालं केवलिपण्णत्तं धम्मं आइक्खेज्जा ?, हंता आइक्खेज्जा, से णं पडिसुणेज्जा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, अभविए णं से तस्स धम्मस्स सवणयाए, से य भवति महिच्छे महारंभे महापरिग्गहे अहम्मिए जाव

Jain Education International 2010-03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगमेसाणं दुल्लभबोहिए यावि भवति, तंएवं खलु समणाउसो ! तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं पडिसुणेत्तए ।४६। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पं० तं०-इणमेव निग्गंथे पावयणे सच्चे जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेति जस्स णं धम्मस्स निग्गंथी सिक्खाए उवट्ठिया विहरमाणी पुरा दिगिंछाए० उदिण्णकामजाया विहरेज्जा, सा य परक्कमेज्जा, सा य परक्कममाणी पासेज्जा से जा इमा इत्थिया भवति एगा एगजाया एगाभरणपिहाणा तेलपेलाइव सुसंगोविया चेलपेलाइव सुसंपरिग्गहिया रयणकरंडगसमाणा तीसे णं अतिजायमाणीए वा निज्जायमाणीए वा पुरओ महं दासीदास जाव किं ते आसगस्स सदति ?, जं पासित्ता निग्गंथी निदाणं करेति-जति इमस्स तवनियमबंभचेर जाव भुंजमाणी विहरामि, सेत्तं साहुणी, एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथी निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति महड्ढिएसु जाव सा णं तत्थ देवे भवति जाव भुंजमाणे विहरइ, सा णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं० अणंतरं चयं चइत्ता जे इमे भवंति उग्गपुत्ता महामाउगा भोगपुत्ता महामाउया एतेसिं णं अण्णतरंसि कुलंसि दारियत्ताए पच्चायाति, सा णं तत्थ दारिया भवति सुकुमाल जाव सुरूवा, तते णं तं दारियं अम्मपियरो उम्मुक्कबालभाव विणयपरिणयमित्तं जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिरूवेणं सुंकेणं पडिरूवस्स भत्तारस्स भारियत्ताए दलंति, सा णं तस्स भारिया भवति एगा एगजाया इट्ठा जाव रयणकरंडगसमाणी, तीसे जाव अतिजायमाणीए वा निज्जायमाणीए वा पुरओ महं दासीदास जाव किं ते आसगस्स सदति ?, तीसे णं तहप्पगाराए इत्थियाए तहारूवे समणे वा माहणे वा उभओकालं केवलिपण्णत्तं धम्म आइक्खेज्जा ?, हंता आइक्खेज्जा, सा णं भंते ! पडिसुणेज्जा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, अभविया णं सा तस्स धम्मस्स सवणयाए, सा य भवति महेच्छा महारंभा महापरिग्गहा जाव दाहिणगामिए नेरइए आगमिस्साए दुल्लभबोहियत्ताए भवति, एवं खलु समणाउसो ! तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं पडिसुणगामिए ।४७। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते इणमेव निग्गंथे पावयणे तह चेव जस्स णं धम्मस्स निग्गंथे सिक्खाए उवट्ठिए विहरमाणे पुरादिगिंछाए जाव से य परक्कममाणे पासेज्जा-इमा इत्थिका भवति एगा एगजाया जव किं ते आसगस्स सदति ?, जं पासित्ता निग्गंथे निदाणं करेति दुक्खं खलु पुमत्तणए, जे इमे उग्गपुत्ता महामाउया भोगपुत्ता महामाउया एतेसिं णं अण्णतरेसु उच्चवएसु महासमरसंगामेसु उच्चावयाइं सत्थाइं उरसि चेव पडिसंवेदेंति तं दुक्खं खलु पुमत्तणए, इत्थीत्तणं साहु, जति इमस्स तवनियमबंभचेरवासस्स फलवित्तिविसेसे अत्थि वयमवि आगमेस्साणं जाव इमेरूवाइं उरालाइं इत्थीभोगाइं भुञ्जिस्सामो, सेत्तं सहू, एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथे निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइअपडिक्कंते जाव अपडिवज्जित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु जाव से णं तत्थ देवे भवति महिड्ढिए जाव विहरति, से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव अणंतरं चइत्ता अण्णतरंसि कुलंसि दारियत्ताए पच्चायाति जाव ते णं तं दारियं जाव भारियत्ताए दलयंति, सा णं तस्स भारिया भवति एगा एगजाया जाव तहेव सव्वं भाणियव्वं, तीसे णं अतिजायमाणी वा जाव किं ते आसगस्स सदति ?, तीसे णं तहप्पगाराए इत्थिकाए तहारूवे समणे वा माहणे वा धम्मं आइक्खेज्जा ?, हंता आइक्खेज्जा, जाव किं पडिसुणेज्ज ?, णो तिणट्ठे समट्ठ, अभविया णं सा तस्स धम्मस्स पडिसवणयाए, सा य भवति महिच्छा जाव दाहिणगामिए नेरइए, आगमिस्साणं दुल्लभबोहिए यावि भवति, एवं खलु समणाउसो ' तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे भवति जं णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं पडिसुणेत्तए ।४८। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पन्नते इणमेव निग्गंथे जाव अंतं करेति जस्स णं धम्मस्स निग्गंथी सिक्खाए उवट्ठिया विहरमाणी पुरादिगिंछाए जाव उदिण्णकामजाया विहरेज्जा, सा य परक्कममाणी पासेज्जा से जे इमे भवंति उग्गपुत्ता महामाउया भोगपुत्ता माहामाउया जाव किं ते आसगस्स सदति ?, जं पासित्ताणं निग्गंथी नियाणं करेति-दुक्खं खलु इत्थित्तणए, दुस्संचाराइं वामंतराइं जाव सन्निवेसंतराइं, से जहानामए अंबपेसियाति वा अंबाडपेसीयाति वा मातुलुंगपेसियाति वा मंसपेसियाति वा उच्छुखंडियाति वा संबलिफालियाति वा बहु जणस्स आसासणिज्जा पत्थणिज्जा विं (पी) हणिज्जा अभिलसणिज्जा एवामेव इत्थिकावि बहुजणस्स आसासणिज्जा जाव अभिलसणिज्जा, तं दुक्खं खलु इत्थित्तणए, पमुत्तणए साहु, जइ इमस्स तवनियम जाव अत्थि अहमवि आगमिस्साणं इमाइं एयारूवाइं पुरिसभोगभोगाइं भुंजिस्सामि, से तं साहुणी, एवं खलु समणाउसो !

निग्गंथी निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंता जाव अपडिवज्जित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, से णं तत्थ देवे भवति महिड्ढिए जाव चइत्ता तहेव दारए भवति जाव किं ते आसगस्स सदति ?, तस्स णं तहप्पगारस्स पुरिसजायस्स जाव अभविए णं से तस्स धम्मस्स सवणयाए, से य भवति महिच्छे जाव दाहिणगामिए नेरइए जाव दुल्लहबोहिए यावि भवति, एवं खलु जाव पडिसुणित्तए ।४९। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते इणमेव निग्गंथे पावयणे जाव तहेव, जस्स णं धम्मस्स निग्गंथे वा निग्गंथी वा सिक्खाए उवट्ठिए विहरमाणे पुरादिगिंछाए जाव उदिण्णकामभोगे विहरिज्जा, से य परकमेज्जा, से य परिक्कममाणे माणुसेहिं कामभोगेहिं निव्वेयं गच्छेज्जा, माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा अणितिया असासया सडणपडणविद्धंसणधम्मा उच्चारपासवणखेलसिंघाणवंतपित्तसुक्कसोणियसमुब्भवा दुरूवउस्सासनिस्सासा दुरूवमुत्तपुरिसपुण्णा वंतासवा पित्तासवा खेलासवा पच्छा पुरं च णं अवस्सं विप्पजहणिज्जा, संति उड्ढं देवा देवलोए ते णं तत्थ अण्णेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेंति अप्पणा चेव अप्पाणं विउव्वित्ता परियारंति अप्पणिज्जियाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारंति, जति इमस्स तवनियम जाव तं चेव सव्वं भाणिंव्वं जाव वयमवि आगमेसाणं इमाइं एयारूवाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरामो, सेत्तं साहू, एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथे वा निग्गंथी वा निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति तं०-महिड्ढिएसु जाव पभासमाणे, से णं देवे अण्णं देवं अण्णं देवीं तं चेव जाव पवियारेंति, से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं तं चेव जाव पुमत्ताए पच्चायाति व किं ते आसगस्स सदति ?. तस्स णं तहप्पगारस्स पुरिसजायस्स तहारूवे समणे वा माहणे वा जाव पडिसुणेज्जा ?, हंता पडिसुणेज्जा, से णं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोइज्जा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, अभविये णं से तस्स धम्मस्स सद्दहणताए०, से भवति महिच्छे जाव दाहिणगामिए नेरइए आगमेस्साए दुल्लभबोहिए यावि भवति, एवं खलु समणाउसो ! तस्स णियाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जं णो संचा,ति केवलिपण्णत्तं धम्मं सद्दहेत्तए वा पत्तिइत्तए वा रोइत्तए वा ।५०। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते तं चेव से य परक्कममाणे माणुस्सएसु कामभोगेसु निव्वेयं गच्छेज्जा, माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा अणितिया तहेव जाव संति उड्ढं देवा देवलोगंसि ते णं तत्थ णो अण्णठ देवं णो य अण्णाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेंति अप्पणा चेव अप्पाणं विउव्वित्ता परियारेंति ता जइ इमस्स तवनियम तं चेव सव्वं जाव से णं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, अण्णत्थरूई रूइमायाए से भवति, से जे इमे आरण्णिया आवसहिया गामणियंतिया किण्हुरहस्सिया णो बहुसंजया णो बहुपडिविरया सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु अप्पणा सच्चामोसाइं पउंजंता अहं ण हंतव्वो अण्णे हंतव्वा अहं न अज्जावेयव्वो अण्णे अज्जावेयव्वा अहं न परियावेयव्वो अण्णे परियावेयव्वा अहं न परिघेत्तव्वो अण्णे परिघेत्तव्वा अहं न उद्दवेयव्वो अण्णे उद्दवेयव्वा, एवामेव इत्थिकामेहिं मुच्छिया गढिया गिद्धा अज्झोववण्णा जाव कालमासे कालं किच्चा अण्णतराइं आसुराइं किब्बिसियाइं ठाणासं उववत्तारो भवंति, ततो मुच्चमाणा भुज्जो २ एलमूलयत्ताए पच्चायति, तं खलु समणाउसो ! तस्स निदाणस्स जाव णो संचाएति केवलिपण्णत्तं धम्मं सद्दहित्तए वा० ।५१। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते जाव माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा तहेव संति उड्ढं देवा देवलोयंसि अण्णं देवं च देवीं अभिजुंजिय २ परियारेंति णो अप्पणा चेव अप्पाणं विउव्विय २ परियारेंति, जति इमस्स तवनियम तं चेव जाव एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथो वा निग्गंथी वा निदाणं किच्चा अणालोइयअप्पडिक्कंते जाव विहरति, से णं तत्थ अण्णे देवे अण्णाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेति, णो अप्पणा चेव अप्पाणं विउव्विय २ परियारेति, से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं तहेव वत्तव्वं णवरं हंता सद्दहिज्जा पतिएज्जा रोएज्जा से णं सीलवयगुणव्वयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं पडिवज्जेज्जा ?, नो इणट्ठे समट्ठे, से णं दंसणसावए भवति अभिगयजीवाजीवे जाव अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते जाव एस अट्ठे० सेसे अणट्ठे, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणइ त्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोगेसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, तंएवं खलु समणाउसो ! तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएइ सीलव्वयगुणवयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासाइं पडिवज्जित्तए ।५२। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पं० तं चेव सव्वं जाव से य परक्कममाणे देवमाणुस्सएहिं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कामभोगेहिं निव्वेदं गच्छेज्जा, माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा जाव विप्पजहणिज्जा, दिव्वावि खलु कामभोगा अधुवा अणितिया असासया चला चयणधम्मा पुणरागमणिज्जा पच्छा पुव्वं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जा, जति इमस्स तवनियम जाव आगमिस्साणं जे इमे भवंति उग्गपुत्ता महामाउया जाव पुमत्ताए पच्चायंति, तत्थ णं समणोवासए भविस्सामि अभिगतजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे जाव फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेमाणे विहरिस्सामि, से तं साहू, एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथो वा निग्गंथी वा निदाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइय जाव देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव आसगस्स सदति ?, तस्स णं तहप्पगारस्स पुरिसजातस्स जाव हंता सद्दहिज्जा, से णं सीलवयजावपोसहोववासाइय पडिसज्जेज्जा ?, हंता पडिवज्जेज्जा, सेणं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा ?, णो इणट्ठे समट्ठे, से णं समणोवासए भवति अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरति, से णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे बहूणि वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणइ त्ता आबाधंसि उप्पण्णंसि वा अणुप्पन्नंसि वा बहूइं भत्ताइं पच्चक्खाइ त्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेति त्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, एवं खलु समणाउसो ! तस्स निदाणस्स इमेयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएति सव्वओ मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।५३। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते जाव से य परक्कममाणे दिव्वमाणुस्सएहिं कामभोगेहिं निव्वेयं गच्छेज्जा, माणुस्सगा खलु कामभोगा अधुवा जाव विप्पजहणिज्जा, दिव्वावि खलु कामभोगा अधुवा जाव पुणरागमणिज्जा, जइ इमस्स तवनियम जाव वयमवि आगमेसाणं जाइं इमाइं कुलासं भवंति तं० - अंतकुलाणि वा पंतकुलाणि वा तुच्छकुलाणि वा दरिद्दकुलाणि वा किविणकुलाणि वा भिक्खागकुलाणि वा एएसिं णं अण्णतरंसि कुलंसि पुयत्ताए पच्चायंति, एस मे आयापरियाए सुणीहडे भविस्सति, से तं साहू, एवं खलु समणाउसो ! निग्गंथो वा निग्गंथी वा नियाणं किच्चा तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंते सव्वं तं चेव से णं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा ?, हंता पव्वइज्जा, से णं तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झेज्जा जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेज्जा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, से णं भवति जेमे अणगारा भगवंतो ईरियासमिया जाव बंभयारिए तेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति त्ता आबाहंसि उप्पण्णंसि वा जाव भत्ताइं पच्चक्खाइंति ?, हंता पच्चक्खाइंति, बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति ?, हंता छेदेंति०, छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, एवं समणाउसो ! तस्स नियाणस्स इमे एयारूवे पावफलविवागे जं णो संचाएति तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झेज्जा जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ।५४। एवं खलु समणाउसो ! मए धम्मे पण्णत्ते इणमेव निग्गंथे पावयणे जाव से परक्कमेज्जा सव्वकामविरत्ते सव्वरागविरत्ते सव्वसंगातीते सव्वसिणेहातिक्कंते सव्वचारित्तपरिवुडे, तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेण जाव परिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जेज्जा, तते णं से भगवं अरहा भवति जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी सदेवमणुआसुराए जाव बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणति त्ता अप्पणो आउसेसं आभोएति त्ता मत्तं पच्चक्खाइ त्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ त्ता तओ पच्छा चरमेहिं ऊसासनिस्सासेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खारमंतं करेति, तंएवं समणाउसो ! तस्स अणिदाणस्स इमेयारूवे कल्लाणे फलविवागे जं तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणंमंतं करेति ।५५। तते णं ते बहवे निग्गंथा य निग्गंथीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति त्ता तस्स ठाणस्स आलोएंति पडिक्कमंति जाव अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडित्तज्जंति ।५६। तेण कालेणं० समणे भगवं महावीरे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाणं बहूणं देवाणं बहूणं देवीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए एवं आइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ आयातिठाणनामं अज्झयणं सअट्ठं सेहउयं सकारणं ससुत्तं सअत्थं सतदुभयं सवागरणं जाव भुज्जो भुज्जो उवदंसेतित्ति बेमि ।५७।। **卐卐卐 आयातिस्थानाध्ययनं १०।। आयारदसाओ दशाश्रुतस्कंधच्छेदसूत्रं 卐卐卐**

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org